सांध्य दैनिक 4PM

दुनिया की सबसे खूबसूरत चीजें ना ही देखी जा सकती हैं और ना ही छुई, उन्हें बस दिल से महसूस किया जा सकता है।
-हेलेन केलर

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंक 98 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, गुरुवार 14 मई, 2026

भारत को मिली फीबा अंडर-18 एशियन कप... 7 | नीट यूजी 2026 परीक्षा के पेपर... 3 | हार के बावजूद अटूट है बंधन... 2

सस्पेंस साफ, सतीशन के सिर पर ताज

10 दिनों तक दिल्ली से तिरुवनंतपुरम तक चली सत्ता की सुनामी

» वेणुगोपाल का त्याग, राहुल का दांव और केरल में कांग्रेस का नया विस्फोट

» आखिरकार कार्यकर्ताओं की हुंकार के आगे झुक गया आलाकमान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केरल की राजनीति में पिछले 10 दिनों से उठ रहा धुआं आखिरकार साफ हो चुका है। कांग्रेस के अंदर चल रही खामोश जंग, लॉबिंग, गुटबाजी, बंद कमरों की बैठकों और दिल्ली दरबार की माथापच्ची के बाद आखिर वह फैसला सामने आ गया जिसने पूरे दक्षिण भारत की राजनीति को नया मोड़ दे दिया। वीडी सतीशन अब सिर्फ विपक्ष का चेहरा नहीं बल्कि केरल कांग्रेस की नई धड़कन और सत्ता का नया केंद्र बन चुके हैं।

दिल्ली के गलियारों में आखिरी वक्त तक केसी वेणुगोपाल का पलड़ा भारी माना जा रहा था। राहुल गांधी के सबसे भरोसेमंद नेताओं में गिने जाने वाले वेणुगोपाल को लेकर यह लगभग तय माना जा रहा था कि आलाकमान उन्हें ही मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठाएगा। लेकिन फिर कुछ ऐसा हुआ जिसने कांग्रेस की दशकों पुरानी हाईकमान संस्कृति को झटका दे दिया। केरल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने खुलकर संदेश दिया कि अगर जनता की लड़ाई लड़ने वाला चेहरा चाहिए अगर लेफ्ट की जड़ों को हिलाने वाला योद्धा चाहिए अगर सड़कों से विधानसभा तक संघर्ष की आग चाहिए तो सिर्फ और सिर्फ वीडी सतीशन।

कांग्रेस ने क्यों बदला सत्ता का रूट?

राजनीति सिर्फ चेहरे नहीं बदलती राजनीति रास्ते बदलती है। और केरल में कांग्रेस ने वही किया है। जिस तरह दुनिया की अर्थव्यवस्था होर्मुज स्ट्रेट से होकर गुजरती है उसी तरह केरल कांग्रेस की सत्ता की राजनीति भी अब एक नए पॉवर रूट से गुजरने जा रही है। दिल्ली दरबार समझ चुका था कि अगर उसने जमीनी सच्चाई को नजरअंदाज किया तो पार्टी अंदर से फट सकती है। कार्यकर्ता लगातार संदेश दे रहे थे कि वेणुगोपाल संगठन के बड़े नेता जरूर हैं लेकिन जनता की नब्ज सतीशन के हाथ में है। यही वजह रही कि आखिरी दौर की बैठकों में राहुल गांधी ने खुद दखल दिया। उन्होंने वेणुगोपाल को समझाया कि यह सिर्फ एक पद का सवाल नहीं बल्कि कांग्रेस के भविष्य का सवाल है। और यहीं से शुरू हुआ त्याग का वो अध्याय जिसने कांग्रेस को संभावित बगावत से बचा लिया। वेणुगोपाल ने कदम पीछे खींचे लेकिन बदले में नैतिक ऊंचाई हासिल कर ली। कांग्रेस अब इसे सैक्रिफाइस मॉडल के तौर पर पेश कर रही है जहां व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से ऊपर पार्टी और जनता को रखा गया।

केरल में कांग्रेस का नया अध्याय शुरू

10 दिनों का सस्पेंस खत्म हो चुका है। दिल्ली की राजनीति, कार्यकर्ताओं का दबाव, राहुल गांधी की रणनीति और वेणुगोपाल के त्याग ने मिलकर केरल कांग्रेस में एक नया अध्याय लिख दिया है। वीडी सतीशन अब सिर्फ मुख्यमंत्री नहीं बल्कि कांग्रेस की उस नई राजनीति का चेहरा बन चुके हैं जो जमीन से उठती है संघर्ष से बनती है और कार्यकर्ताओं की आवाज पर खड़ी होती है। और यही वजह है कि केरल की राजनीति में अब सिर्फ सरकार नहीं बदली पूरा नैरेटिव बदल गया है।

और आखिरकार कांग्रेस आलाकमान को झुकना पड़ा

यह सिर्फ मुख्यमंत्री चुनने का फैसला नहीं था यह कांग्रेस के भीतर बदलती राजनीति का ऐलान था। यह संदेश था कि अब सिर्फ दिल्ली का दरबार नहीं चलेगा जमीन की आवाज भी सुनी जाएगी। राहुल गांधी ने आखिरकार अपने सबसे करीबी साथी केसी वेणुगोपाल को मना लिया। यह आसान नहीं था। क्योंकि वेणुगोपाल सिर्फ एक नेता नहीं बल्कि कांग्रेस संगठन के सबसे ताकतवर रणनीतिकारों में से एक माने जाते हैं। लेकिन उन्होंने पीछे हटकर जो राजनीतिक त्याग दिखाया उसने कांग्रेस के भीतर एक नया नैरेटिव खड़ा कर दिया। राजनीतिक विश्लेषक मान रहे हैं कि अगर आलाकमान जिद में आकर वेणुगोपाल को मुख्यमंत्री बना देता तो कांग्रेस के भीतर असंतोष फट सकता था।

कार्यकर्ताओं का एक बड़ा वर्ग खुद को ठगा हुआ महसूस करता। लेफ्ट और बीजेपी दोनों कांग्रेस को दिल्ली से चलने वाली पार्टी कहकर घेरते। लेकिन सतीशन को आगे कर कांग्रेस ने साफ कर दिया कि वह केरल में लोकल फेस, लोकल फाइट के फॉर्मूले पर आगे बढ़ना चाहती है। वीडी सतीशन पिछले पांच वर्षों में लेफ्ट सरकार के लिए सबसे बड़ा सिरदर्द बनकर उभरे। विधानसभा से लेकर सड़क तक हर मुद्दे पर उन्होंने पिनराई विजयन सरकार को घेरा। गोल्ड स्मगलिंग केस हो, भ्रष्टाचार के आरोप हों या प्रशासनिक फैसलों पर सवाल सतीशन ने विपक्ष की भूमिका को सिर्फ बयानबाजी तक सीमित नहीं रखा। यही वजह रही कि केरल कांग्रेस का जमीनी कार्यकर्ता उन्हें संघर्ष का चेहरा मानने लगा।

राहुल गांधी का सबसे बड़ा टेस्ट और सबसे बड़ा संदेश

यह फैसला राहुल के लिए भी बेहद अहम माना जा रहा है। आलोचक लंबे समय से कांग्रेस पर दिल्ली से थोपे गए नेतृत्व का आरोप लगाते रहे हैं। लेकिन इस बार राहुल ने संगठन की आवाज को प्राथमिकता देकर बड़ा राजनीतिक संदेश दिया है। उन्होंने यह भी दिखाया कि कांग्रेस अब सिर्फ हाईकमान आधारित राजनीति नहीं करना चाहती। पार्टी अब ऐसे चेहरों को आगे लाना चाहती है जिनकी जड़ें जमीन में हों। यह फैसला इसलिए भी अहम है क्योंकि दक्षिण भारत में कांग्रेस की उम्मीदें अब काफी हद तक केरल पर टिकी हुई हैं। कर्नाटक में सत्ता के बाद कांग्रेस चाहती है कि केरल में भी वह मजबूत वापसी करे। और इसके लिए उसे ऐसा चेहरा चाहिए था जो सीधे जनता से संवाद कर सके।

सतीशन क्यों बने जनता की पहली पसंद?

वीडी सतीशन की सबसे बड़ी ताकत यही रही कि उन्होंने खुद को सिर्फ टीवी स्टूडियो वाला नेता नहीं बनने दिया। वे लगातार जमीन पर सक्रिय रहे। केरल में बाढ़ हो, बेरोजगारी का मुद्दा हो, युवाओं का गुस्सा हो या सरकारी भ्रष्टाचार सतीशन हर मोर्चे पर मौजूद रहे। उन्होंने लेफ्ट सरकार के खिलाफ ऐसा आक्रामक नैरेटिव तैयार किया कि कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को वर्षों बाद लगा कि पार्टी में लड़ने वाला चेहरा वापस आ गया है। यही वजह है कि जब मुख्यमंत्री के नाम को लेकर चर्चा शुरू हुई, तो जिला इकाइयों से लेकर बूथ स्तर तक एक ही आवाज उठी सतीशन या कोई नहीं। कांग्रेस आलाकमान के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही थी कि अगर वह कार्यकर्ताओं की भावनाओं के खिलाफ जाता तो पार्टी के भीतर असंतोष खुलकर सामने आ सकता था। केरल जैसे राजनीतिक रूप से जागरूक राज्य में यह जोखिम कांग्रेस नहीं लेना चाहती थी।

लेफ्ट के लिए खतरे की घंटी बीजेपी के लिए नई चुनौती

वीडी सतीशन का मुख्यमंत्री बनना सिर्फ कांग्रेस की अंदरूनी जीत नहीं, बल्कि लेफ्ट सरकार के लिए भी खतरे की घंटी माना जा रहा है। क्योंकि सतीशन का पूरा राजनीतिक करियर ही लेफ्ट के खिलाफ आक्रामक लड़ाई से बना है। लेफ्ट अब तक कांग्रेस को कमजोर विपक्ष बताकर राजनीति करता रहा लेकिन सतीशन के नेतृत्व में कांग्रेस अब ज्यादा आक्रामक और संगठित नजर आ सकती है। वहीं बीजेपी के लिए भी यह आसान स्थिति नहीं होगी। क्योंकि कांग्रेस अब केरल में भावनात्मक और वैचारिक दोनों स्तरों पर नई ऊर्जा के साथ उतरती दिखाई दे रही है।

हार के बावजूद अटूट है गठबंधन : एमके स्टालिन

» पूर्व मुख्यमंत्री ने जताया सहयोगियों का आभार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री और डीएमके अध्यक्ष एमके स्टालिन ने धर्मनिरपेक्ष प्रगतिशील गठबंधन (एसपीए) के सभी सहयोगियों, पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं के प्रति आभार व्यक्त किया है। उन्होंने हुए कहा कि 2026 के विधानसभा चुनावों में सत्ता हासिल करने में विफल रहने के बावजूद गठबंधन अपनी वैचारिक और राजनीतिक यात्रा जारी रखेगा।

पूर्व सीएम एमके स्टालिन ने कहा कि गठबंधन तमिलनाडु के अधिकारों और कल्याण की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है और राज्य की संघीय शक्तियों और सामाजिक न्याय ढांचे को कमजोर करने के प्रयासों के खिलाफ एकजुट होकर खड़ा रहेगा। डीएमके के नेतृत्व वाले गठबंधन के नेताओं और कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते हुए स्टालिन ने कहा कि गठबंधन ने 2019 से अब तक कई चुनावी लड़ाइयां लड़ी हैं, जिनमें दो लोकसभा चुनाव, दो विधानसभा चुनाव, स्थानीय निकाय चुनाव और कई उपचुनाव शामिल हैं।

डेढ़ करोड़ से ज्यादा मिले वोट : स्टालिन ने कहा कि गठबंधन के नेता के रूप में, वे सीट बंटवारे की वार्ता, चुनाव प्रचार समन्वय और राजनीतिक बातचीत से संबंधित सभी निर्णयों की पूरी जिम्मेदारी लेते हैं। उन्होंने यह भी खेद व्यक्त किया कि यदि उनके राजनीतिक निर्णयों के कारण चुनावी प्रक्रिया के दौरान किसी गठबंधन नेता या कार्यकर्ता को असुविधा हुई हो। चुनाव परिणामों का जिक्र करते हुए स्टालिन ने कहा कि गठबंधन को भले ही पूर्ण विजय प्राप्त न हुई हो, लेकिन 1.54 करोड़ से अधिक वोट हासिल करना और 72 विधानसभा सीटें जीतना तमिलनाडु की जनता का डीएमके के नेतृत्व वाले गठबंधन पर अटूट विश्वास दर्शाता है।

सिद्धांतवादी राजनीतिक दलों के साथ जारी रहेगा गठबंधन : उन्होंने कहा कि गठबंधन के कई सहयोगी दलों ने पहले ही घोषणा कर दी है कि वे चुनाव परिणामों के बाद भी डीएमके के साथ अपना संबंध बनाए रखेंगे, जो गठबंधन की वैचारिक शक्ति और एकता को दर्शाता है। स्टालिन ने कहा, सिद्धांतवादी राजनीतिक दलों के रूप में, हम एकजुट रहेंगे और तमिलनाडु के लोगों के कल्याण और अधिकारों के लिए अपनी यात्रा जारी रखेंगे। तमिलनाडु की रक्षा करने के लिए हमारे पास पर्याप्त शक्ति और जुझारूपन है।

कमल हासन का भी किया जिक्र

डीएमके अध्यक्ष ने उन नेताओं और संगठनों के समर्थन को भी स्वीकार किया जो सीधे तौर पर चुनावी राजनीति का हिस्सा नहीं थे लेकिन उन्होंने गठबंधन के लिए प्रचार किया। उन्होंने द्रविड़ कजगम के अध्यक्ष के. वीरमणि का विशेष रूप से उल्लेख किया, जिन्होंने 93 वर्ष की आयु होने के बावजूद तमिलनाडु भर में व्यापक रूप से चुनाव प्रचार किया और अभिनेता-राजनेता कमल हासन का भी जिक्र किया, जिन्होंने सार्वजनिक रूप से कहा था कि चुनावी लाभ के लिए निर्वाचन क्षेत्रों की तलाश करने की तुलना में वैचारिक विरोधियों को हराना अधिक महत्वपूर्ण है।

कई नई पार्टियों के साथ हुआ गठबंधन

स्टालिन कहा कि 2026 के विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान कई नई पार्टियां गठबंधन में शामिल हुईं, जिससे तमिलनाडु में एक व्यापक धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक मंच को मजबूती मिली है। स्टालिन ने कहा कि वह गठबंधन के सहयोगियों और राजनीतिक आंदोलनों द्वारा उन पर जताए गए भरोसे को कभी नहीं भूलेंगे, जो चुनाव अभियान के दौरान डीएमके के साथ खड़े रहे। उन्होंने तमिलनाडु कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के. सेल्वापेरुन्थागई, एमडीएमके महासचिव वाइको, डीएमडीके नेता प्रेमलता विजयकांत और वीसीके अध्यक्ष थोल को धन्यवाद दिया। थिरुमावलवन, सीपीआई के राज्य सचिव एम. वीरपांडियन, सीपीआई (एम) नेता पी. शनमुगम, आईयूएमएल नेता केएम कादर मोहिदीन, मनिथानेया मक्कल काची के अध्यक्ष एमएच जवाहिरुल्ला, कोंगुनाडु मक्कल देसिया काची के नेता ईआर ईश्वरन और कई अन्य गठबंधन नेताओं को अभियान के दौरान उनके सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

चलती ट्रेन में बच्चियों का जन्म

» रेलवे कर्मचारियों की मदद से चलती ट्रेनों में दो गर्भवती महिलाओं ने बच्चियों को दिया जन्म, दोनों सुरक्षित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। सेंट्रल रेलवे के अलग-अलग रूट्स पर चल रही दो भीड़भाड़ वाली ट्रेनों में दो गर्भवती महिलाओं ने सुरक्षित बच्चियों को जन्म दिया। रेलवे कर्मचारियों, नर्स, रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) और यात्रियों की मदद से दोनों प्रसव सुरक्षित तरीके से कराए गए।

पहली घटना मुंबई से भुसावल जा रही 22538 कुशीनगर एक्सप्रेस में हुई। रेलवे अधिकारियों के अनुसार, मुख्य टिकट निरीक्षक (सीटीआई) आर.एस. तेली लोकमान्य तिलक टर्मिनस से भुसावल सेक्शन तक ड्यूटी पर थे। ट्रेन के कल्याण स्टेशन पार करने के कुछ देर बाद जनरल डिब्बे के एक यात्री ने उन्हें बताया कि एक गर्भवती महिला को तेज प्रसव पीड़ा हो रही है। जनरल डिब्बे में काफी भीड़ थी और महिला की हालत बिगड़ने लगी थी। ऐसे में रेलवे कर्मचारियों और यात्रियों ने महिला को ए-1 कोच के पास दरवाजे वाली जगह पर पहुंचाया।

यात्रा कर रही नर्स पूजा खड़गे ने कि मदद

इसी दौरान जनरल डिब्बे में सफर कर रही नर्स पूजा खड़गे ने आगे आकर मदद की। उनकी सहायता से चलती ट्रेन में ही महिला का सामान्य प्रसव कराया गया और उसने एक स्वस्थ बच्ची को जन्म दिया। इसके बाद तुरंत छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस के सेंट्रलाइज्ड कंट्रोल ऑफिस रूम (सीसीओआर) को सूचना दी गई। इगतपुरी स्टेशन पर एंबुलेंस, स्ट्रेचर, डॉक्टर, और डिप्टी स्टेशन सुपरिटेंडेंट की व्यवस्था की गई। ट्रेन के इगतपुरी पहुंचने पर मां और नवजात बच्ची को रेलवे अस्पताल ले जाया गया, जहां दोनों की हालत सुरक्षित और स्थिर बताई गई।

दूसरी बच्ची का जन्म पुणे–सुपौल एक्सप्रेस में हुआ

दूसरी घटना पुणे-सुपौल एक्सप्रेस में हुई, जहां सेंट्रल रेलवे के %ऑपरेशन मातृशक्ति% के तहत एक गर्भवती महिला ने सुरक्षित बच्ची को जन्म दिया। ट्रेन पुणे रेलवे स्टेशन से समय पर रवाना हुई थी और बिहार के सुपौल जिले की ओर जा रही थी। जनरल डिब्बे में सफर कर रही 28 वर्षीय रुखसाना खातून अपने पति जमील बेलावर के साथ यात्रा कर रही थीं। यह दंपति उत्तर प्रदेश का रहने वाला है और उन्हें चंदौली जिले के पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन पर उतरना था, लेकिन ट्रेन के अहिल्यानगर स्टेशन के पास पहुंचते ही रुखसाना को अचानक प्रसव पीड़ा शुरू हो गई। ट्रेन तेज रफ्तार में थी और डिब्बे में भारी भीड़ होने के कारण तुरंत मेडिकल सहायता मिलना मुश्किल हो गया। घटना की जानकारी मिलते ही रेलवे अधिकारियों ने तुरंत %ऑपरेशन मातृशक्ति% शुरू किया। आरपीएफ जवानों, रेलवे कर्मचारियों और यात्रियों ने मिलकर ट्रेन में सुरक्षित प्रसव कराया। बाद में मां और नवजात को मेडिकल सहायता दी गई और दोनों की हालत स्थिर बताई गई। इन दोनों घटनाओं ने दिखाया कि मेडिकल इमरजेंसी के दौरान रेलवे कर्मचारी, सुरक्षा बल, डॉक्टर और यात्री मिलकर किस तरह तुरंत मदद कर मां और नवजात की जान बचाने में अहम भूमिका निभाते हैं।

हिमाचल प्रदेश : कल दोपहर तीन बजे थम जाएगा प्रचार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिमला। हिमाचल प्रदेश में चार नगर निगम समेत 51 शहरी स्थानीय निकायों के चुनाव के लिए तैयारियां अंतिम चरण में हैं। चुनाव प्रचार का समय कल यानी 15 मई 2026 को दोपहर 3 बजे समाप्त हो जाएगा। इसके बाद उम्मीदवार केवल घर-घर जाकर व्यक्तिगत संपर्क (डोर-टू-डोर) प्रचार कर सकेंगे। कोई भी रैली, जुलूस या ढोल-नगाड़ों वाला प्रचार नहीं हो सकेगा।

चुनाव आयोग के निर्देशानुसार 15 मई दोपहर 3 बजे से 17 मई को मतदान समाप्त होने तक पूरे राज्य में ड्राई-डे रहेगा। शराब की दुकानें, बीयर बार और होटलों में शराब परोसने की सुविधा बंद रहेगी। उल्लंघन करने वालों पर एक्साइज विभाग सख्त कार्रवाई करेगा। 17 मई को सुबह 7 बजे से दोपहर 3 बजे तक 51 निकायों में मतदान होगा।

दूध पर आफत : देश की दो बड़ी कंपनियों ने बढ़ाए दाम

» अमूल और मदर डेयरी दूध की बड़ी कीमतें आज से लागू

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अमूल इंडिया के बाद अब मदर डेयरी ने भी दूध के दाम में बढ़ोतरी की है। यह बढ़ोतरी 2 रुपए प्रति लीटर के हिसाब से की गई है। कंपनी ने बताया कि नई दरें 14 मई 2026 से प्रभावी हो जाएंगी। मदर डेयरी के प्रवक्ता ने कहा कि पिछले एक साल में किसानों से दूध खरीद की लागत में करीब 6 प्रतिशत की लगातार बढ़ोतरी हुई है। उपभोक्ताओं पर कम असर डालने की कोशिश के बावजूद कीमतों में संशोधन जरूरी हो गया था।

कंपनी के मुताबिक, यह बढ़ोतरी पूरी लागत के मुकाबले आंशिक है और इसका उद्देश्य किसानों के हित तथा उपभोक्ताओं के बीच संतुलन बनाए रखना है।

प्रवक्ता ने कहा कि मदर डेयरी अपने दूध बिक्री से होने वाली कमाई का लगभग 75 से 80 प्रतिशत हिस्सा किसानों और दूध खरीद पर खर्च करती है। इससे किसानों की आजीविका को समर्थन मिलता है और उपभोक्ताओं को लगातार गुणवत्तापूर्ण दूध उपलब्ध कराया जा सकता है।कंपनी ने बताया कि इससे पहले दूध की कीमतों में आखिरी बार अप्रैल 2025 में संशोधन किया गया था। नई कीमतों के अनुसार, बल्क वेंडेड मिल्क (टोकन मिल्क) का दाम 56 रुपए से बढ़ाकर 58 रुपए प्रति लीटर कर दिया गया है। फुल क्रीम दूध अब 70 रुपए की जगह 72 रुपए प्रति लीटर मिलेगा।

टोंड मिल्क की कीमत 58 रुपए से बढ़ाकर 60 रुपए प्रति लीटर कर दी गई है। वहीं, डबल टोंड मिल्क (लाइव लाइट) अब 52 रुपए के बजाय 54 रुपए प्रति लीटर मिलेगा। गाय के दूध की कीमत 60 रुपए से बढ़ाकर 62 रुपए प्रति लीटर कर दी गई है, जबकि प्रो मिल्क अब 70 रुपए की जगह 72 रुपए प्रति लीटर मिलेगा। वहीं, इससे पहले अमूल इंडिया की तरफ से एक आधिकारिक बयान जारी कर बताया गया था कि अमूल दूध की कीमतों में प्रति लीटर 2 रुपए तक की बढ़ोतरी की गई है। यह बढ़ोतरी अमूल ताजा, अमूल गोल्ड, अमूल शक्ति, अमूल टी स्पेशल और अन्य प्रमुख वैरिएंट्स पर लागू होगी।

अब अमूल ताजा 500 मिली पैक 28 रुपए की जगह 29 रुपए में मिलेगा, जबकि 1 लीटर पैक 55 रुपए से बढ़कर 57 रुपए हो जाएगा। अमूल गाय दूध 500 मिली पैक की कीमत 29 रुपए से बढ़कर 30 रुपए कर दी गई है। अमूल शक्ति 500 मिली पैक अब 31 रुपए की जगह 32 रुपए में मिलेगा। अमूल टी स्पेशल 1 लीटर पैक की कीमत 63 रुपए से बढ़ाकर 66 रुपए कर दी गई है। अमूल गोल्ड 500 मिली पैक अब 34 रुपए की जगह 35 रुपए में मिलेगा। वहीं, अमूल बफेलो मिल्क 500 मिली पैक की कीमत 37 रुपए से बढ़ाकर 39 रुपए कर दी गई है।

भगवंत मान 12वीं कक्षा के टॉपर्स से करेंगे मुलाकात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़ । पंजाब बोर्ड की इंटरमीडिएट परीक्षा में शानदार नतीजों के बाद राज्य के मुख्यमंत्री भगवंत मान गुरुवार को टॉप करने वाले छात्रों से मुलाकात करेंगे। पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड ने 12वीं कक्षा के नतीजे बुधवार को घोषित किए थे। जानकारी के अनुसार, मुख्यमंत्री भगवंत मान गुरुवार को चंडीगढ़ में 12वीं कक्षा में टॉप करने वाले विद्यार्थियों से मिलेंगे।

उन्होंने मंगलवार को 10वीं कक्षा के टॉपर्स से भी मुलाकात की थी। पंजाब बोर्ड की इंटरमीडिएट परीक्षा में पहले तीन स्थानों पर छात्राओं ने बाजी मारी है। मानसा जिले की सुपनीत कौर ने पहला स्थान, लुधियाना जिले की सुहानी चौहान ने दूसरा स्थान और लुधियाना जिले की ही दीवांशी ने तीसरा स्थान हासिल किया।

12वीं कक्षा के नतीजों के बाद बुधवार को मुख्यमंत्री भगवंत मान ने छात्रों को बधाई दी। उन्होंने एक्स पोस्ट में लिखा, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड ने 12वीं कक्षा के नतीजे घोषित कर दिए हैं। यह बड़े गर्व की बात है कि इस बार भी हमारी बेटियों ने शानदार प्रदर्शन किया है। प्रतिभाशाली छात्राओं समेत परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले सभी विद्यार्थियों, उनके माता-पिता और मेहनती शिक्षकों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। बच्चों की यह सफलता तो बस एक शुरुआत है। मुझे पूरा विश्वास है कि आपकी कड़ी मेहनत भविष्य में भी नए कीर्तिमान स्थापित करेगी। आगे बढ़ें और देश व राष्ट्र की सेवा में अपना यथोचित योगदान दें।

घोषित नतीजों के अनुसार, इस वर्ष पंजाब बोर्ड की इंटरमीडिएट परीक्षा में कुल 91.46 प्रतिशत परीक्षार्थी सफल हुए हैं, जो पिछले सत्र 2024-2025 की तुलना में 0.46 फीसदी अंक के साथ थोड़ा बेहतर है। पिछले वर्ष 12वीं बोर्ड का उत्तीर्ण प्रतिशत 91 फीसदी दर्ज किया गया था।

नीट यूजी 2026 परीक्षा के पेपर लीक होने पर फिर बवाल

एनएसयूआई का प्रदर्शन

छात्रों का गुस्सा सातवें आसमान पर

» बोली आप- कैसी सरकार परीक्षा तक नहीं करवा पा रही है

» विपक्ष ने केंद्र सरकार को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। नीट यूजी 2026 परीक्षा के पेपर लीक को केंद्र सरकार रोक नहीं पा रही। इसको लेकर एकबार फिर शिक्षा मंत्रालय सवालों के घेरे में आ गई है। उधर इस मामले में विपक्ष ने भी सवाल उठाया है। आप ने कहा कि कैसी सरकार जो परीक्ष तक नहीं करवा पा रही है। बता दे इससे पहले पिछले साल भी इसको लेकर पूरे देश में बवाल मच गया था। तब सरकार ने बड़ी-बड़ी बातें की थीं पर ढाक के फिर वही तीन पात वाला हाल हुआ।

उधर आरोपों के बाद इसे रद्द कर दिया गया है, जिससे छात्र गुस्से में हैं और एनएसयूआई ने केंद्र सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। लाखों छात्रों के भविष्य को देखते हुए राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी ने पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए मामले की सीबीआई जांच की घोषणा की है। नई परीक्षा तिथियां जल्द ही जारी होंगी। पेपर लीक के आरोपों के बीच नीट यूजी 2026 परीक्षा रद्द होने के बाद नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया-एनएससूआई के कार्यकर्ताओं ने मंगलवार को केंद्र सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान छात्र तख्तियां लिए और नारे लगाते नजर आए। एक तख्ती पर लिखा था, डॉक्टर की डिग्री बिक रही है। समाचार एजेंसी एएनआई द्वारा साझा किए गए दृश्यों में पुलिसकर्मी प्रदर्शनकारियों को चेतावनी देते हुए भी दिखाई दे रहे हैं कि अगर वे तितर-बितर नहीं हुए तो उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) ने पहले 3 मई को आयोजित हुई नीट (यूजी) 2026 परीक्षा को रद्द करने की घोषणा की थी और कहा था कि परीक्षा की तिथियां अलग से घोषित की जाएंगी।

सीबीआई द्वारा अनुमानित प्रश्नपत्र लीक की जांच, 45 गिरफ्तार

भारत सरकार ने इस मामले को व्यापक जांच के लिए केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीबीआई) को सौंप दिया है। एजेंसी इस बात की जांच करेगी कि परीक्षा से पहले कथित अनुमानित प्रश्नपत्र कैसे प्रसारित हुआ और क्या इसमें संगठित रूप से कोई गड़बड़ी हुई थी। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एनटीए) ने कहा है कि वह जांच के लिए आवश्यक सभी रिकॉर्ड, डेटा और सामग्री साझा करके पूर्ण सहयोग करेगा।

सुप्रीम कोर्ट पहुंचा नीट यूजी पेपरलीक मामला

नीट यूजी पेपर लीक का मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। दायर याचिका में NTA को हटाकर नई संस्था के गठन की मांग की गई है। साथ ही यह भी मांग की गई है कि सीबीआई से चार हफ्ते में स्टेट्स रिपोर्ट मांगा जाए। सर्वोच्च न्यायालय में यह याचिका फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया मेडिकल एसोसिएशन (FAIMA) ने दायर की है। इसमें NTA में सुधार और न्यायालय की निगरानी में परीक्षा को फिर से लेने की मांग की गई है। याचिकाकर्ता की प्रमुख मांगों में से एक यह है कि NTA को या तो पूरी तरह बदल दिया जाए या उसमें बड़ा सुधार किया जाए, ताकि एक नई, मजबूत, हाई-टेक और स्वतंत्र संस्था बनाई जा सके। याचिकाकर्ता ने न्यायालय से NEET-UG 2026 परीक्षा फिर से कराए जाने की अपील की है।

सीबीआई द्वारा की जाएगी परीक्षा

एनटीए ने आगे कहा कि परीक्षा से जुड़े आरोपों की व्यापक जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा की जाएगी। एनटीए ने एक बयान में कहा कि यह निर्णय पारदर्शिता बनाए रखने और राष्ट्रीय परीक्षा प्रणाली में विश्वास को बरकरार रखने के हित में लिया गया है। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) ने केंद्रीय एजेंसियों के समन्वय से प्राप्त जानकारी और कानून प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा साझा किए गए जांच निष्कर्षों के आधार पर भारत सरकार की मंजूरी से 3 मई 2026 को आयोजित एनईटी (यूजी) 2026 परीक्षा को रद्द करने और परीक्षा को अलग से अधिसूचित तिथियों पर पुनः आयोजित करने का निर्णय लिया है। पुनः आयोजित परीक्षा की तिथियों के साथ-साथ पुनः जारी किए गए प्रवेश पत्र की समय-सारणी की जानकारी आगामी दिनों में एजेंसी के आधिकारिक माध्यमों से दी जाएगी। एजेंसी ने आगे कहा कि वह ब्यूरो को अपना पूरा सहयोग देगी और जांच के लिए आवश्यक सभी सामग्री, रिकॉर्ड और सहायता प्रदान करेगी।

छात्रों की मेहनत, त्याग और सपनों को इस भ्रष्ट भाजपाई व्यवस्था ने कुचल दिया : राहुल

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने नीट परीक्षा रद्द होने को लेकर केंद्र सरकार और भाजपा पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि यह केवल एक परीक्षा रद्द होने का मामला नहीं, बल्कि देश के लाखों युवाओं के भविष्य के साथ बड़ा अन्याय है। राहुल गांधी ने कहा, नीट यूजी 2026 की परीक्षा रद्द हो गई। 22 लाख से ज्यादा छात्रों की मेहनत, त्याग और सपनों को इस भ्रष्ट भाजपाई व्यवस्था ने कुचल दिया। उन्होंने कहा कि किसी पिता ने बच्चों की पढ़ाई के लिए कर्ज लिया, किसी मां ने गहने बेचे और लाखों छात्रों ने रात-रात भर जागकर तैयारी की, लेकिन बदले में उन्हें पेपर लीक, सरकारी लापरवाही और शिक्षा व्यवस्था में संगठित भ्रष्टाचार मिला। राहुल गांधी ने कहा कि हर बार पेपर माफिया बच निकलते हैं और ईमानदार छात्र सजा भुगतते हैं। अब लाखों छात्रों को दोबारा मानसिक तनाव, आर्थिक बोझ और अनिश्चितता का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा, अगर किसी की तकदीर मेहनत से नहीं, बल्कि पैसे और पहुंच से तय होगी, तो फिर शिक्षा का मतलब क्या रह जाएगा? राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधते हुए कहा कि प्रधानमंत्री का तथाकथित अमृतकाल अब देश के युवाओं के लिए विषकाल बन गया है। उन्होंने कहा कि लगातार हो रहे पेपर लीक और परीक्षा घोटाले देश की शिक्षा व्यवस्था को कमजोर कर रहे हैं।

बोले नेता प्रतिक्ष- प्रधानमंत्री का तथाकथित अमृतकाल अब देश के युवाओं के लिए विषकाल बना

पेपर लीक पूरी तरह से मिलीभगत : केजरीवाल

पेपर लीक को पूरी तरह से मिलीभगत का मामला बताते हुए अरविंद केजरीवाल ने सरकार की आलोचना की और पिछले लीक के दोषियों को सजा न मिलने पर सवाल उठाए। उन्होंने छात्रों के कड़े परिश्रम और त्याग के प्रति सहानुभूति जताते हुए इस घटना को राजनीतिक संरक्षण का परिणाम बताया। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने मंगलवार को आरोप लगाया कि 3 मई को आयोजित नीट-यूजी 2026 परीक्षा पेपर लीक की खबरों के बाद रद्द कर दी गई, जिसमें बड़े पैमाने पर मिलीभगत और राजनीतिक संरक्षण का आरोप है। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री ने दावा किया कि लाखों छात्रों का भविष्य दांव पर है और सवाल उठाया कि पिछले NEET पेपर लीक मामलों के लिए जिम्मेदार लोगों को सजा क्यों नहीं दी गई। पेपर पहली बार लीक नहीं हुआ है। मुझे लगता है कि यह 2017 में एक बार, 2021 में एक बार और 2024 में एक बार लीक हुआ था। और अब यह एक बार लीक हो चुका है। अगर पेपर चार बार लीक हो चुका है, तो ऐसे पेपर लीक होना आम बात नहीं है। इसका मतलब है कि इसमें बड़े पैमाने पर मिलीभगत है। इसमें राजनीतिक संरक्षण शामिल है। उन्होंने आगे कहा कि मैं जानना चाहता हूँ, 2017 में परीक्षा का पेपर लीक करने वाले कहाँ हैं? क्या उन्हें सजा मिली? 2021 में परीक्षा का पेपर लीक करने वालों को सजा मिली? 2024 में परीक्षा का पेपर लीक करने वाले सभी को जमानत मिल गई। सब बाहर हैं। उन्होंने कहा कि सबको अगले पेपर को लीक करने की तैयारी करने को कहा गया था। और वे ऐसा कर रहे हैं। इस देश में क्या चल रहा है? और मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ कहता हूँ, सरकार चलाना आसान काम नहीं है। सरकार चलाना बहुत मुश्किल काम है। सरकार उन लोगों के साथ क्या करेगी जो बिना पेपर लीक किए ठीक से परीक्षा नहीं करा सकते? ये लोग एकजुट हैं। यह पूरी तरह से मिलीभगत का मामला है। आईआईटी और सिविल सेवा सहित प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के अपने अनुभव को याद करते हुए, आम आदमी पार्टी के नेता ने कहा कि वे परीक्षा की तैयारी में शामिल कठिनाइयों और त्याग को समझते हैं।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

सदनों में अच्छी छवि के प्रतिनिध कब पहुंचेंगे?

> पांच राज्यों के ताजा चुनावों में जो प्रतिनिधि चुने गए हैं उनका अपाराधिक इतिहास चिंता का विषय है। जिस पार्टी को बहुमत मिलता उसकी संख्या इस मामले में उतनी अधिक है। इस लिहाज से उसकी जिम्मेदारी ज्यादा बड़ी है कि वह इसे रोकने ने के लिए ठोस पहल करे।

सरकारें व समाज में सुधार की बातें बड़ी होती रहती है। पर चुनावों के मामले में सिर्फ बातें ही होती रहती हैं। चुनाव सुधारों को लेकर हो रही तमाम चर्चाओं और कानूनी प्रावधानों के बीच देश में अब भी एक तथ्य पर उतनी चर्चा नहीं होती जितनी होनी चाहिए। यह तथ्य है चुने गए दागदार जनप्रतिनिधियों की लगातार बढ़ती संख्या का। पांच राज्यों के ताजा चुनावों में जो प्रतिनिधी चुने गए हैं उनका अपाराधिक इतिहास चिंता का विषय है। जिस पार्टी को बहुमत मिलता उसकी संख्या इस मामले में उतनी अधिक है। इस लिहाज से उसकी जिम्मेदारी ज्यादा बड़ी है कि वह इसे रोकने ने के लिए ठोस पहल करे। केंद्रशासित पुडुचेरी को अलग रखते हुए अन्य चार राज्यों में निर्वाचित हुए दागी विधायकों की संख्या लोकतंत्र पर सवालिया निशान खड़े करने वाली है। एडीआर के ताजा आंकड़ों में बताया गया है कि प. बंगाल, तमिलनाडु, असम और केरल में कुल 794 निर्वाचित सदस्यों में से 451 पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। इनमें 322 के खिलाफ तो हत्या, हत्या का प्रयास और बलात्कार जैसे गंभीर मामले हैं।

केरल में तो चुने गए 140 में से 114 के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज होना भयावह तस्वीर की तरफ इशारा करता है। जिस राज्य में 80 प्रतिशत से अधिक विधायक आपराधिक मामलों में घिरे हों वहां कानून व्यवस्था बनाए रखने का भरोसा कैसे और किस पर किया जाए? प. बंगाल में 294 में से 190 पर आपराधिक मामले दर्ज है। खास बात ये कि पिछले चुनाव में यह संख्या 142 ही थी। ये आंकड़े इशारा करते है कि हर चुनाव में दागी विधायकों की संख्या बढ़ रही है। तमिलनाडु में 234 में 126 और असम में 126 में से 21 के खिलाफ आपराधिक मामलों का दर्ज होना ये संकेत भी कर रहा है कि इस मामले में हर राज्य और हर राजनीतिक दल बराबर का भागीदार है। राहत की बात ये है कि असम में पिछले चुनाव में 34 दागी विधायकों के मुकाबले इस बार संख्या कम होकर 21 रह गई है। सवाल ये महत्वपूर्ण नहीं कि किस राजनीतिक दल के कितने दागी विधायक है, सवाल ये महत्वपूर्ण है कि साफ-सुथरी राजनीति की बात करने वाले दल टिकट बांटते समय ये बात भूल क्यों जाते हैं? वहां तो राजनीतिक दलों को सिर्फ जीत की गारंटी चाहिए होती है। यही हाल रहा तो आने वाले समय में दागी विधायकों-सांसदों की बढ़ती संख्या पर लगाम लगाना मुश्किल हो जाएगा। देश में तमाम मुद्दों को लेकर सर्वदलीय बैठक बुलाने वाली सरकार और राजनीति दलों को क्या इतने महत्तवपूर्ण मुद्दों पर मुखर नहीं होना चाहिए राजनीति में पनपी इस बुराई का खात्मा बिना आम सहमति के नहीं किया जा सकता।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

पीएम मोदी की देशवासियों से दूरदृष्टियुक्त अपील

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

ऐसा नहीं है कि भारत विदेशी मुद्रा के मामलें में संकट में हो बल्कि वास्तविकता तो यह है कि 10 अप्रैल, 2026 के आंकड़ों की ही बात करें तो भारत का विदेशी मुद्रा भण्डार आज उच्चतम स्तर पर है। 700 बिलियन अमेरिकी डालर से अधिक का विदेशी मुद्रा भण्डार भारत के पास है। एक मोटे अनमुन के अनुसार आगामी 11 माह से अधिक समय तक आयात मांग की पूर्ति इस राशि से आसानी से हो सकती है। विदेशी मुद्रा भण्डार से एफसीए यानी कि विदेशी मुद्रा संपत्ति, स्वर्ण भण्डार और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष में आरक्षित राशि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। पर इसके सबके बावजूद भविष्य के संभावित संकट के हालातों से निपटने की आवश्यक तैयारियां समय रहते पूरी की जाती है तो यही दूरदृष्टि कहलाती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भविष्य के वैश्विक हालात साफ दिखाई दे रहे हैं।

हालातों में सुधार की संभावना निकट भविष्य में दिखाई भी नहीं दे रही है। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने केवल एक वर्ष के लिए अनावश्यक खर्चों में कटौती का आग्रह देशवासियों से किया है। इसमें ईंधन बचाना, सोना नहीं खरीदने, विदेशी यात्राओं व विदेशों में शादी नहीं करने, खाने के तेल के उपयोग में 10 प्रतिशत तक की कटौती व खेती में रासायनिक उर्वरकों के उपयोग में 50 प्रतिशत तक की कटौती करने का सुझाव प्रमुख है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के देशवासियों से आग्रह को लेकर आलोचक भले ही मुद्दा बनाने का प्रयास करें पर वैश्विक हालात आज सबके सामने हैं। देशवासियों को मालूम है कि पेट्रोलियम उत्पादों इनमें कच्चे तेल से लेकर गैस आदि शामिल है आदि के लिए आयात पर निर्भरता अधिक है। देश में 979 अरब अमेरिकी डॉलर का सालाना आयात होता है जिसमें से करीब 38 प्रतिशत आयात केवल और केवल पेट्रोलियम पदार्थों पर ही हो रहा है। सोना-चांदी और इलेक्ट्रोनिक्स के साथ ही फर्टिलाइजरों के मामलें में भी विदेशों पर निर्भरता अधिक है। करीब 10 प्रतिशत राशि सोने के आयात पर खर्च होती है। यदि समग्र रुप से देखा जाए तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने तेलंगाना के सिकन्दराबाद से देशवासियों से जो आग्रह किया है वह ऐसा नहीं है जो किसी भी तरह से देशवासियों के लिए दुबिधाजनक हो।

वैश्विक संकट के चलते देश-दुनिया की इकोनोमी पर पड़ने वाले संभावित असर को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की देशवासियों से दूरदृष्टियुक्त अपील से कोरोना काल की याद ताजा हो रही है तो पूर्व प्रधानमंत्री स्व. लालबहादुर शास्त्री की तत्कालीन अन्न संकट के दौरान सप्ताह में एक दिन के उपवास के आग्रह की और चला जाता है। अमेरिका-इजरायल और ईरान युद्ध सीजफायर के आसार अभी दिखाई नहीं दे रहे हैं तो दूसरी और दोनों ही देशों की हठधर्मिता के कारण हार्मुज जलसमरुमध्य से परिवहन बाधित होने का परिणाम दुनिया के देशों के सामने हैं। दुनिया के देशों को यह समझ लेना होगा कि अमेरिका-ईरान युद्ध केवल दो या तीन देशों के बीच युद्ध तक सीमित ना होकर इसके असर से आज कोई देश दूर दूर तक अछूता नहीं दिखाई दे रहा है। यह दो देशों की अहम् की लड़ाई ना होकर समूची मानवता को प्रभावित करने वाले हालात है। आज दुनिया के देशों की एक दूसरे पर निर्भरता बढ़ी है। बिना किसी अन्य देश के सहयोग के कोई भी देश अपने स्तर पर अपने देशवासियों की आवश्यकताओं को पूरा करने की स्थिति में नहीं है। आर्थिक उदारीकरण के बाद से आज विश्व विश्व ग्राम में परिवर्तित हो गया है। एक बात यह भी साफ हो जानी चाहिए कि आज अमेरिका-इजरायल और ईरान संकट का हल निकल भी आता है तब भी वैश्विक हालात सामान्य होने में लंबा समय लग जाएगा। युद्धरत देश यह समझने की कोशिश नहीं कर रहे है कि उनके अहम् के चलते दुनिया आज सालों पीछे जा रही है। विकास बाधित हो रहा है, आर्थिक गतिविधियां प्रभावित हो रही है और हालात दिन प्रतिदिन बिगड़ते ही जा रहे हैं। आज सबको मालूम है कि अमेरिका-ईरान युद्ध के चलते रास्ता अवरुद्ध होने के कारण

कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस का आयात प्रभावित हो रहा है। हार्मुज का रास्ता अवरुद्ध है। हालात की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि ईरान को प्रतिदिन 2800 करोड़ रुपए के कच्चे तेल को समुद्र में बहाना पड़ रहा है।

तेल उत्पादक अन्य देश भी संकट के दौर से गुजर रहे हैं। ऐसे में जीवाश्म ईंधन के उपयोग में कमी लाने, सार्वजनिक परिवहन वाहनों के उपयोग और वाहन पूलिंग का एक साल का सुझाव या आग्रह दूरदृष्टिपूर्ण व देशहित में ही माना जाना चाहिए। इसके साथ ही इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग का बढ़ावा देना भविष्य के पर्यावरण संकट से बचाव और हरित उर्जा को बढ़ावा देने में ही सहायक हो सकेगा। इसी तरह से हमारे देश में सोने के खरीद के प्रति खास मोह रहता आया है पर हालातों को देखते हुए व्यापक राष्ट्रहित में एक साल के लिए सोना नहीं खरीदे तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है।

भारतीय सैन्य सेवा की प्रतिज्ञा और अनुबंध के मायने

लेफ्टिनेंट जनरल एसएस मेहता सेवानिवृत्त

कोहिमा युद्ध स्मारक पर एक सादा-सा शिलालेख है, जिसको भारतीय भूमि पर लड़े गए भीषणतम युद्धों में एक की यादगार में लगाया था, इस पर उकेरी पंक्ति है : 'जब तुम घर लौटोगे, तो उन्हें हमारे बारे में बताना और कहना कि तुम्हारे कल के लिए, हमने अपना आज दिया'। यह कोई नारा नहीं, सच्चाई की दास्तां है। बहुत से लोगों को पहले और दूसरे विश्व युद्ध में भारतीय सैनिकों के योगदान का तो पता है, जो तीन महाद्वीपों में लड़ी गई थीं। लेकिन बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि दूसरे विश्व युद्ध की एक लड़ाई भारतीय भूमि पर भी लड़ी गई। कोहिमा की लड़ाई, जिसे 'भूला-बिसरा युद्ध' भी कहा गया था , आज दुनिया भर के सैन्य इतिहासकार इसे द्वितीय महायुद्ध के बेहतरीन सैन्य अभियानों में से एक के रूप में मानते हैं। वर्ष 1944 में, पहाड़ी की चोटी पर -जो बाद में कोहिमा की लड़ाई का पर्याय बन गयी-सैनिक इतनी नजदीकी से लड़े कि आमने-सामने की खंदकों के बीच पड़ता टेनिस कोर्ट ही युद्ध का मैदान बन गया।

वर्षों बाद वह शिलालेख न केवल प्राप्त विजय के बारे में है, बल्कि उससे कहीं अधिक गहरी चीज का प्रतीक बन गया, अपने आप में सैन्य सेवा की प्रकृति का। इसने कुछ नया नहीं रचा। यह तो एक प्राचीन विरासत पर मुहर लगाता है- भारतीय सैनिक की सभ्यतागत विरासत पर। ऐतिहासिक रूप से, भारतीय सैनिक सदा बलिदान देने के लिए स्वेच्छा से अग्रणी रहा है। यह खासियत मायने रखती है। आज इसका महत्व पहले से कहीं अधिक है। दूसरों के उलट, सैनिक अपनी मर्जी से नौकरी नहीं छोड़ सकता, न यूनियन बना सकता है, न ही तबादले के खिलाफ मुकदमा कर सकता है, और न ही वह किसी ऐसे आदेश को मानने से इनकार कर सकता है जिसकी वजह से उसकी जान भी जा सकती हो। यह महज एक जीवनशैली चुनने का मामला नहीं। जो हक अन्य नागरिकों के पास होते हैं, यह उनका कानूनन समर्पण करना है। गणतंत्र का यह एकमात्र पेशा है, जहां संविधान केवल वह चीज नहीं जिसके तहत आप जीते हैं, बल्कि यह वह चीज है जिसके लिए आपको अपनी जान देने का आदेश भी दिया जा सकता है।

इस शपथ को उसी ढांचे के अधीन रखना जिसमें सामान्य 'दायित्व-आधारित सेवा' परिभाषित की जाती है, न केवल प्रशासनिक लापरवाही, बल्कि एक 'श्रेणीगत त्रुटि' भी होगी। लेकिन सैनिक का दायित्व शरीर से आगे उसके 'स्व' में समा जाता है। वह उन सब चीजों को छोड़ देता है, जो बतौर नागरिक जीवन में उसको अलग पहचान देती हैं। मसलन, भाषा, जाति, धर्म, क्षेत्र, राजनीतिक पसंद और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं-ये सभी इंसान के तौर पर उसका हिस्सा तो बनी रहती हैं, लेकिन उस विस्तारित मानसिकता पर हावी नहीं हो पातीं, जिसमें वह स्वयं को ढाल चुका होता है। यह बदलाव क्रियान्वयन से जुड़ा है। गोलीबारी के बीच पहचान प्रबंधन की खातिर एकजुटता खारिज नहीं हो सकती। रेजिमेंट काम कर पाती है क्योंकि वर्दी 'स्व' की जगह कुछ बड़ा स्थापित कर देती है।

पहचान अहलदा रखनी पड़ती है क्योंकि जिंदा रहने, कमान और भरोसे के लिए यह करना जरूरी है। अंततः सैनिक हरेक नागरिक का सैनिक बन जाता है। जब वह बाढ़, आग या हिंसा-दंगे के बाद राहत पहुंचाने किसी के द्वार पहुंचता है, तो वह उससे उसकी जाति नहीं पूछता। न ही सैनिक अपनी जाति बताता है। भारतीय समाज को बांटने वाली चीजें उस दहलीज पर पहुंचते ही मिट जाती हैं। वह निजी पहचान रूपी टुकड़े को वहां पहुंचने से बहुत पहले तज चुका होता है। सेवा चयन बोर्ड में भर्ती के वक्त। पासिंग-आउट परेड में। पहली बार जब वह वर्दी पहनता और समझ बन जाती है कि यह उससे क्या चाहती है। नौकरी के लिए यह त्याग वक्ती नहीं। सेवा का सबसे गहरा रूप है। दरवाजे पर पहुंचा सैनिक बतौर एक देश आया है। बिना भेदभाव, बिना संकोच, बिना किसी शर्त के राहत पहुंचाने। भारत में सेना उन चंद संस्थाओं में से है, जहां 'अनेकता में एकता' नारा न होकर कामकाजी अनिवार्यता है। यह उपलब्धि, हमारे गणतंत्र की बड़ी संस्थागत सफलताओं में से एक है। 'जेनरेशन जेड' (1997 से 2012 के बीच पैदा हुई पीढ़ी) इसे सहज बोध से जानती है। यह पीढ़ी संस्थाओं का महिमामंडन नहीं करती।

अपनी एकमात्र जिंदगी कैसे बिताई जाए, इस बारे में सोच-समझकर भर्ती होती है। यह पीढ़ी पहचान से भरपूर ऐसी दुनिया में पली है, जिसमें प्रत्येक मंच पर उसे बढ़िया कर दिखाना, खुद को बेहतर दिखाना पड़ता है। 'स्व' अब प्रदर्शन बन गया जो थकाऊ होता है। फिर उनका सामना वर्दी से होता है। वर्दी कहती है यहां, इनमें से किसी भी चीज के मायने नहीं। उनमें से कई के लिए, यह कोई बलिदान न होकर एक राहत है। सेना वह प्रदान करती है जो कोई नवाचार, वेतन और इन्फ्लुएंसर अर्थव्यवस्था नहीं दे सकती, एक ऐसा उद्देश्य जो 'स्व' को अपने अंदर समाहित कर ले और उसके बदले कहीं ज्यादा बड़ा लौटाए। नयी पीढ़ी खुद को न्योछावर करने से भाग नहीं रही। उसे तलाश है ऐसी जगह की, जहां उसका 'स्व' अंततः तिरोहित हो जाए। और वह जगह है वर्दी। आज जो युवा स्वयंसेवक आगे आता है, वह भर्ती आंकड़ों का कोई इत्तेफाक नहीं, न ही किसी और युग की यादें। 'जेनरेशन जेड' ने न सिर्फ अपनी रुचि से, बल्कि अपने परिवार, साथियों और आसपास के नैतिक माहौल से विरासती मूल्यों से भी आकार पाया है। इसी निरंतरता के बीच कहीं न कहीं, सैनिक बनने की विरासत आज भी इस गणतंत्र की रगों में जिंदा है। यही वजह कि सैनिक बनने का आकर्षण कायम है।

बिठूर

इतिहास और आस्था का अनोखा संगम

अगर आप कानपुर के आसपास एक शांत और ऐतिहासिक जगह घूमने की तलाश में हैं, तो बिठूर एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है। गंगा नदी के किनारे बसा यह छोटा सा कस्बा धार्मिक आस्था, ऐतिहासिक घटनाओं और प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। यहां कई ऐसे मंदिर, घाट और ऐतिहासिक स्थल हैं जो पर्यटकों और श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं। खास बात यह है कि यह जगह वीकेंड ट्रिप या एक दिन की यात्रा के लिए बिल्कुल परफेक्ट मानी जाती है। अगर आप धार्मिक, ऐतिहासिक और शांत पर्यटन स्थल की तलाश में हैं, तो बिठूर आपके लिए एक शानदार विकल्प हो सकता है। यहां के मंदिर, घाट और ऐतिहासिक स्थल न केवल आस्था से जुड़े हैं बल्कि भारत के समृद्ध इतिहास की झलक भी दिखाते हैं। कानपुर से बिठूर की दूरी लगभग 20-25 किमी है। अगर आप सड़क मार्ग से जा रहे हैं तो बस, टैक्सी या निजी वाहन से आसानी से पहुंच सकते हैं। इसके अलावा बाहर से आने वाले पर्यटक निकटतम रेलवे स्टेशन कानपुर सेंट्रल पहुंचकर यात्रा कर सकते हैं। कानपुर से बिठूर तक का सफर लगभग 40-50 मिनट में पूरा हो जाता है।

घूमने का सबसे अच्छा समय

बिठूर घूमने के लिए अक्टूबर से मार्च का समय सबसे अच्छा माना जाता है। इस दौरान मौसम सुहावना होता है और गंगा किनारे घूमने का अनुभव भी शानदार रहता है।

पत्थर घाट

यह बिठूर का एक बेहद सुंदर और ऐतिहासिक घाट है। इस घाट का निर्माण पत्थरों से किया गया है, इसलिए इसे पत्थर घाट कहा जाता है। इस घाट की खासियत है कि यहां की वास्तुकला बेहद आकर्षक है। फोटोग्राफी के लिए शानदार जगह और गंगा नदी का शांत वातावरण देखने को मिलता है।

ब्रह्मावर्त घाट

यह बिठूर का सबसे प्रसिद्ध और पवित्र घाट माना जाता है। मान्यता है कि यहां भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना के लिए यज्ञ किया था, इसलिए इसे ब्रह्मावर्त घाट कहा जाता है। इस घाट से गंगा नदी का बेहद सुंदर दृश्य दिखता है। सुबह और शाम की आरती में शामिल हो सकते हैं। यहां का वातावरण शांत और आध्यात्मिक है। सूर्यास्त के समय यहां का नजारा बेहद खूबसूरत लगता है।

वाल्मीकि आश्रम

यह स्थान महर्षि वाल्मीकि से जुड़ा हुआ माना जाता है। मान्यता है कि यहां ही सीता माता ने अपने पुत्र लव और कुश को जन्म दिया था। इस वजह से यह जगह रामायण से जुड़ी महत्वपूर्ण धार्मिक स्थली मानी जाती है। यहां देखने लायक जगहों में वाल्मीकि मंदिर, आश्रम परिसर है।

ध्रूव टीला

यह स्थान ध्रूव जी की तपस्या से जुड़ा हुआ माना जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, ध्रुव ने यहां भगवान विष्णु की कठोर तपस्या की थी, जिसके बाद उन्हें आकाश में ध्रुव तारा बनने का आशीर्वाद मिला। ध्रूव टीला ब्रह्मावर्त घाट से नजदीक है, जहां नाव से भी जा सकते हैं। यहां की ऊंचाई से दिखाई देने वाला सुंदर दृश्य मनमोहक और वातावरण शांत है।

नाना राव पार्क मेमोरियल

यह स्थान 1857 के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा हुआ है। यहां नाना साहेब पेशवा से संबंधित स्मारक और ऐतिहासिक स्थल मौजूद हैं। यह जगह इतिहास में रुचि रखने वाले लोगों के लिए खास मानी जाती है। साथ ही पार्क के अंदर संग्रहालय भी बना हुआ है।

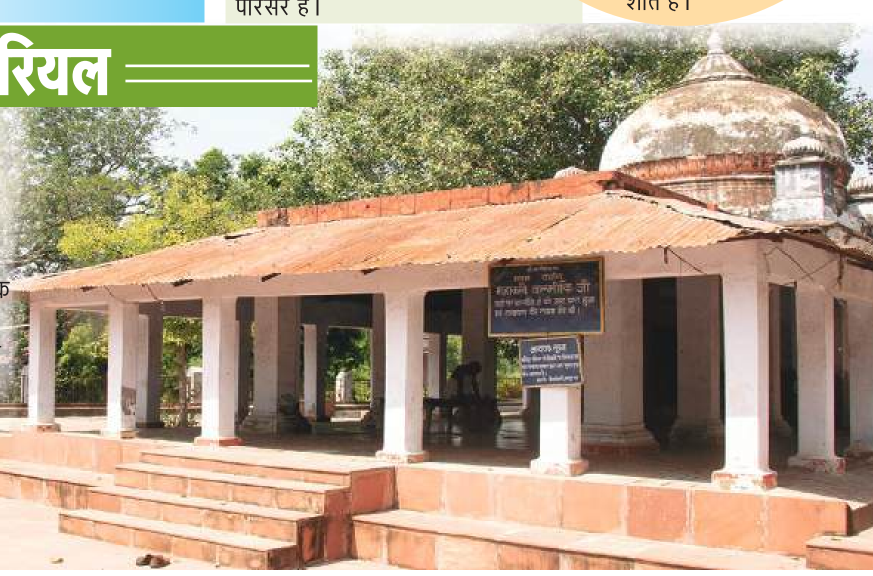

हंसना मना है

पत्नी ने गुस्से में पति से कहा: मैं तंग आ गई हूं रोज की किच-किच से.. मुझे तलाक चाहीये! पति: ये लो चॉकलेट खाओ.. पत्नी (रोमांटिक होते हुए): मना रहें हो मुझे.. पति: नहीं रे पगली, मां कहती है, अच्छा काम करने से पहले,मीठा खाना चाहिए।

पप्पू: पापा बुलेट दिला दो, बाप: पड़ोसन की लड़की को देख बस से जाती है.. पप्पू: यही तो देखा नहीं जाता!

पप्पू अपनी पत्नी से: अच्छा ये बताओ 'बिदाई' के समय तुम लड़कियां इतनी रोती क्यों हो? पत्नी: 'पागल' अगर तुझे पता चले.. अपने घर से दूर ले जाकर कोई तुमसे 'बर्तन मंजवाएगा' तो तू क्या नाचेगा।

मेरे एक पड़ोशी है, जिनका नाम है 'भगवान' और उनकी लड़की का नाम है भक्ति, मम्मी बोलती है कि, बेटा भगवान की भक्ति में मन लगाया कर' अब मम्मी को कैसे समझाऊं की भक्ति में तो मन लगाता हूं, पर भगवान नहीं मान रहे।

आजकल दो चीज सिर्फ किस्मत वालों को ही मिलती है.. एक तो जंगल में घुमता सफेद हाथी..! और दुसरा बिना अफेयर वाला जीवन साथी।

कहानी — दूध से भरा कुआं

एक राज्य में महामारी फैल गयी। चारों ओर लोग मरने लगे। राजा ने इसे रोकने के लिये बहुत सारे उपाय करवाये मगर कुछ असर न हुआ और लोग मरते रहे। दुखी राजा ईश्वर से प्रार्थना करने लगा। तभी अचानक आकाशवाणी हुई। हे राजा! तुम्हारी राजधानी के बीचों बीच जो पुराना सूखा कुंआ है, अगर अमावस्या की रात को राज्य के प्रत्येक घर से एक-एक बाल्टी दूध उस कुएं में डाला जाये तो अगली ही सुबह ये महामारी समाप्त हो जायेगी और लोगों का मरना बन्द हो जायेगा। राजा ने तुरन्त ही पूरे राज्य में यह घोषणा करवा दी कि महामारी से बचने के लिए अमावस्या की रात को हर घर से कुएं में एक-एक बाल्टी दूध डाला जाना अनिवार्य है। अमावस्या की रात जब लोगों को कुएं में दूध डालना था। उसी रात एक चालाक एवं कंजूस बुढ़िया ने सोंचा कि सारे लोग तो कुंए में दूध डालेंगे, अगर मैं अकेली एक बाल्टी पानी डाल दूं तो किसी को क्या पता चलेगा। इसी विचार से बुढ़िया ने रात में चुपचाप एक बाल्टी पानी कुंए में डाल दिया। अगले दिन जब सुबह हुई तो लोग वैसे ही मर रहे थे। कुछ भी नहीं बदला था क्योंकि महामारी समाप्त नहीं हुई थी। राजा ने जब कुंए के पास जाकर इसका कारण जानना चाहा तो उसने देखा कि सारा कुंआ पानी से भरा हुआ है। दूध की एक बूंद भी वहां नहीं थी। राजा समझ गया कि इसी कारण से महामारी दूर नहीं हुई और लोग अभी भी मर रहे हैं। दरअसल ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि जो विचार उस बुढ़िया के मन में आया था वही विचार पूरे राज्य के लोगों के मन में आ गया और किसी ने भी कुंए में दूध नहीं डाला। जब भी कोई ऐसा समाज का धर्म का गौसंरक्षण का काम आता है जिसे बहुत सारे लोगों को मिल कर करना होता है तो अक्सर हम अपनी जिम्मेदारियों से यह सोच कर पीछे हट जाते हैं कि अब तो बहुत से लोग जुड़ गए हैं कोई न कोई तो कर ही देगा और हमारी इसी सोच की वजह से स्थितियां वैसी की वैसी बनी रहती हैं। अगर हम दूसरों की परवाह किये बिना अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाने लग जायें तो समाज में ऐसा बदलाव ला सकते हैं।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष
आय में वृद्धि होगी। शेयर मार्केट से लाभ होगा। नौकरी में प्रभाव वृद्धि होगी। व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा। घर-परिवार में सुख-शांति रहेगी। जल्दबाजी न करें।

तुला
मेहनत अधिक व लाभ कम होगा। किसी व्यक्ति के उकसाने में न आएं। शत्रुओं की पराजय होगी। व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा। आय में निश्चितता रहेगी।

वृषभ
पूजा-पाठ में मन लगेगा। कानूनी अड़चन दूर होगी। जल्दबाजी से हानि संभव है। थकान रहेगी। कुसंगति से बचें। निवेश शुभ रहेगा। पारिवारिक सहयोग प्राप्त होगा।

वृश्चिक
जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। मेहनत का फल मिलेगा। कार्यसिद्धि होगी। निवेश लाभदायक रहेगा। व्यापार-व्यवसाय में मनोनुकूल लाभ होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

मिथुन
आय में निश्चितता रहेगी। शत्रुभय रहेगा। घर-परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। वाणी पर नियंत्रण रखें। चोट व दुर्घटना से बड़ी हानि हो सकती है।

धनु
व्यापार मनोनुकूल लाभ देगा। जोखिम बिलकुल न लें। उत्साहवर्धक सूचना प्राप्त होगी। भूले-बिसरे साथियों से मुलाकात होगी। विरोधी सक्रिय रहेंगे।

कर्क
प्रेम-प्रसंग में जोखिम न लें। व्यापार में लाभ होगा। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। निवेश में सोच-समझकर हाथ डालें। शत्रु पस्त होंगे। विवाद में न पड़ें। प्रसन्नता रहेगी।

मकर
बेरोजगारी दूर करने के प्रयास सफल रहेंगे। कारोबारी बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। निवेश में सोच-समझकर हाथ डालें। आशंका-कुशंका रहेगी।

सिंह
परीक्षा व साक्षात्कार आदि में सफलता प्राप्त होगी। स्थायी संपत्ति से बड़ा लाभ हो सकता है। समय पर कर्ज चुका पाएंगे। नौकरी में अधिकारी प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगे।

कुम्भ
व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा। आय होगी। फालतू खर्च पर नियंत्रण रखें। बजट बिगड़ेगा। कर्ज लेना पड़ सकता है। शारीरिक कष्ट से बाधा उत्पन्न होगी।

कन्या
मनपसंद भोजन का आनंद प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय लाभप्रद रहेगा। समय की अनुकूलता का लाभ मिलेगा। पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा। लाभ होगा।

मीन
उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। शेयर मार्केट से बड़ा लाभ हो सकता है। संचित कोष में वृद्धि होगी। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। यात्रा लाभदायक रहेगी। निवेश शुभ रहेगा।

19 जून को सिनेमाघरों में दस्तक देगी सामंथा की फिल्म मां इंटी बंगारम

बॉलीवुड | मसाला

सामंथा रुथ प्रभु अपनी नई फिल्म मां इंटी बंगारम को लेकर लगातार सुर्खियों में हैं। यह फिल्म नंदिनी रेड्डी द्वारा निर्देशित एक्शन थ्रिलर है। फैंस काफी समय से इस फिल्म का इंतजार कर रहे हैं। अब मेकर्स ने फिल्म की ऑफिशियल रिलीज डेट का खुलासा कर दिया है। सामंथा की यह फिल्म पहले 15 मई 2026 को रिलीज होने वाली थी, लेकिन अब मेकर्स ने नई रिलीज डेट का खुलासा कर दिया है। उन्होंने सामंथा का एक पोस्टर शेयर किया, जिसमें एक्ट्रेस साड़ी पहने हाथ में बंदूक लिए काफी इंटेंस लुक में नजर आ रही हैं।

पोस्ट के कैप्शन में उन्होंने लिखा- अब ट्रिगर दबाने का समय आ गया है। साथ ही मेकर्स ने नई रिलीज डेट अनाउंस की है। सामंथा रुथ प्रभु अपनी नई फिल्म मां इंटी बंगारम अब दुनियाभर में 19 जून 2026 को रिलीज होगी। 'मां इंटी बंगारम' सामंथा और नंदिनी रेड्डी की ओह बेबी के बाद दूसरी फिल्म है। यह एक कॉमेडी-एक्शन फैमिली ड्रामा है। इसमें सामंथा एक गृहिणी के साथ-साथ मजबूत योद्धा की भूमिका में नजर आएंगी। फिल्म में दिगंत, गुलशन देवैया, श्रीमुखी, गौतमी और बाकी कलाकार भी हैं।

सामंथा को आखिरी बार शुभम फिल्म में कैमियो रोल में देखा गया था। 'मां इंटी बंगारम' के अलावा सामंथा जल्द ही वेब सीरीज रक्त ब्रह्मांड- द ब्लडी किंगडम में भी नजर आएंगी, जिसमें आदित्य रॉय कपूर, अली फजल और वामिका गब्बी भी हैं। फिल्म का प्रमोशन पहले ही शुरू हो चुका है।

बॉलीवुड | मन की बात

'दीदी' गाने को मैं दो दशकों से अधिक समय से अपने शोज में गा रही हूं : उषा उत्थुप

गायिका उषा उत्थुप इन दिनों एक गाने को लेकर चर्चाओं में हैं। ये गाना उन्होंने अपने एक लाइव शो के दौरान परफॉर्मेंस देते हुए गाया। गाने का शीर्षक है 'दीदी', यह अरबी धुन पर तैयार एक गीत है। सोशल मीडिया पर उषा उत्थुप का इस गाने को गाते हुए वीडियो वायरल होने के बाद, लोगों का कहना है कि ये इस गाने के बोल पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर निशाना हैं। अब उषा उत्थुप ने इस पूरे मामले पर प्रतिक्रिया दी है और इस गाने के पीछे की सच्चाई बताई है। बीते दिनों एक सोशल मीडिया यूजर ने एक लाइव परफॉर्मेंस से उषा उत्थुप का बंगाली गीत 'दीदी' गाते हुए एक वीडियो शेयर किया था। यूजर ने आरोप लगाया कि उषा ममता बनर्जी पर निशाना साध रही थीं। क्योंकि ममता बनर्जी को दीदी कहा जाता है। यूजर ने लिखा, 'दीदी के बंगाल छोड़ने के जश्न में उषा उत्थुप ने दीदी गा गाकर मस्ती की। यह याद रखना चाहिए कि टीएमसी शासन के दौरान उनके शोज के लिए कथित तौर पर उनसे कमीशन की मांग की गई थी, जिसके कारण वे परेशान हुईं और मुंबई चली गईं। अब वे वापस लौट आई हैं।' अब मामला बढ़ने पर सिंगर खुद सामने आई हैं और उन्होंने इस पर प्रतिक्रिया साझा की है। उषा उत्थुप ने अपने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट साझा किया, जिसमें उन्होंने अपने वायरल वीडियो में किसी भी राजनीतिक अर्थ से साफ इनकार किया है। अपनी पोस्ट में उन्होंने लिखा, 'ट्विटर, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप पर मेरे बारे में एक पोस्ट वायरल हो रही है। मैं यह स्पष्ट करना चाहती हूं कि उस पोस्ट में कही गई कई बातें गलत और भ्रामक हैं। विवादित गीत एक बंगाली गीत है, जिसे कई साल पहले लिखा गया था और यह एक अरबी धुन से प्रेरित है। मैं इसे दो दशकों से अधिक समय से लगातार अपने शोज में गा रही हूं। मैं यह स्पष्ट करना चाहती हूं कि मैं 1976 से कोलकाता में रह रही हूं और तब से मैंने कोलकाता नहीं छोड़ा और मुंबई नहीं गई।

प्राइवेसी की वजह से बॉलीवुड से दूरी बनाए हुए हैं अनुष्का शर्मा !

अनुष्का शर्मा पिछले करीब आठ साल से बॉलीवुड में फिल्में नहीं कर रही हैं। उनकी आखिरी फिल्म 'जीरो' थी, जो साल 2018 में रिलीज हुई थी। अब वह कभी-कभी विज्ञापनों में नजर आती हैं। उनके कई फैंस जानना चाहते हैं कि आखिर अनुष्का फिल्में क्यों नहीं कर रही हैं?

अनुष्का शर्मा ने साल 2017 में क्रिकेटर विराट कोहली से शादी की थी। जनवरी 2021 में उनकी बेटी वामिका का जन्म हुआ और फरवरी 2024 में बेटे अकाय का जन्म हुआ। इसके बाद परिवार लंदन रहने चला गया। अनुष्का और विराट ने कभी साफ-साफ नहीं बताया कि वे भारत क्यों छोड़कर गए।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार माधुरी दीक्षित के पति डॉ. श्रीराम नेने ने बताया था कि वे बच्चों को लाइमलाइट से दूर शांति से बड़ा करना चाहते हैं। इसलिए अनुष्का नए फिल्मी प्रोजेक्ट भी नहीं ले रही हैं।

अनुष्का अब परिवार और बच्चों को ज्यादा समय देना चाहती हैं। लंदन में रहने और प्राइवेसी की वजह से वे बॉलीवुड से दूरी बनाए हुए हैं। एक बार सिमी गरेवाल के शो में अनुष्का ने कहा था कि शादी और बच्चों के बाद वे फिल्मों से दूर हो जाना चाहती हैं। उन्होंने कहा था, मैं शादी करना चाहती हूं, बच्चे चाहती हूं और शादी के बाद शायद काम नहीं करूंगी।

अनुष्का ने साल 2022 में 'चकदा एक्सप्रेस' की शूटिंग पूरी कर ली थी। यह फिल्म क्रिकेटर झूलन गोस्वामी की जिंदगी पर बनी बायोपिक है। फिल्म के अधिकार नेटफ्लिक्स के पास हैं, लेकिन अभी तक रिलीज नहीं हुई है। यह फिल्म कई साल से अटकी हुई है। कथित तौर पर नेटफ्लिक्स को इसका स्टाइल पसंद नहीं आया था।

दुनिया के इस इकलौते देश में नहीं है एक भी गांव साफ-सुथरे और व्यवस्थित देशों में है शुमार

जब हम किसी देश की पहचान की बात करते हैं, तो आंखों के सामने सबसे पहले उसकी संस्कृति की तस्वीर उभरती है और इस तस्वीर के रंग अक्सर गांवों से ही आते हैं। मिट्टी की खुशबू, खेतों की हरियाली, आपसी अपनापन और सादगी भरा जीवन, यही वो तत्व हैं जो किसी भी देश की असली आत्मा को जीवंत बनाते हैं। खासकर भारत जैसे देशों में गांव सिर्फ जगह नहीं, बल्कि परंपराओं और प्रकृति से गहरे रिश्ते का प्रतीक हैं, जहां सामूहिक जीवनशैली आज भी सांस लेती है। यही वजह है कि दुनिया के अधिकतर देशों चाहे अमेरिका हो, चीन या भारत में गांवों का अस्तित्व अब भी कायम है। लेकिन एक देश ऐसा भी है, जहां गांवों की यह तस्वीर पूरी तरह गायब है। यह देश है सिंगापुर एक ऐसा सिटी-स्टेट, जहां आपको पारंपरिक गांव या ग्रामीण जीवन की झलक नहीं मिलेगी। यहां का हर कोना आधुनिकता में डूबा हुआ है। न खेत-खलिहान, न कच्चे रास्ते सिर्फ ऊंची इमारतें, बेहतरीन सड़कें और अत्याधुनिक सुविधाएं। सिंगापुर पूरी तरह से शहरी ढांचे में ढला हुआ देश है। हालांकि, इसकी कहानी हमेशा ऐसी नहीं थी। इतिहास के पन्ने पलटें तो पता चलता है कि आज का यह चमकता-दमकता देश कभी छोटे-छोटे मछुआरों के गांवों से बना था। 1970 के दशक तक यहां 200 से ज्यादा गांव मौजूद थे, जहां बड़ी आबादी पारंपरिक तरीके से जीवन जीती थी। फिर आया बदलाव का दौर और इस बदलाव की नींव पड़ी इसकी रणनीतिक स्थिति से। 19वीं सदी में जब सिंगापुर ब्रिटिशों के लिए एक अहम व्यापारिक केंद्र बना, तब से यहां विकास की रफ्तार तेज हो गई। प्रमुख समुद्री मार्गों के पास होने के कारण यह देश धीरे-धीरे वैश्विक व्यापार और अर्थव्यवस्था का बड़ा केंद्र बन गया। सिंगापुर के पास जमीन कम थी, लेकिन सोच बड़ी। इसी सोच के साथ सरकार ने योजनाबद्ध शहरीकरण को अपनाया। धीरे-धीरे गांवों को हटाकर उनकी जगह ऊंची इमारतें, आधुनिक अस्पताल, स्कूल और बेहतरीन इंफ्रास्ट्रक्चर खड़ा किया गया। आज नतीजा सबके सामने है, सिंगापुर दुनिया के सबसे विकसित, साफ-सुथरे और व्यवस्थित देशों में शुमार है। यहां की जीवनशैली, अनुशासन, आधुनिक सुविधाएं और मजबूत ढांचा इसे बाकी देशों से अलग पहचान देते हैं। यह देश इस बात का उदाहरण है कि सही योजना और दूर दृष्टि से एक छोटा-सा राष्ट्र भी दुनिया में बड़ी पहचान बना सकता है।

अजब-गजब | ये है दुनिया की सबसे खूंखार जेल

इस जेल में कैदियों का सिर काटकर खेलते हैं फुटबाल

जेल का नाम सुनते ही दिमाग में ऐसी जगह की तस्वीर बनती है, जहां अपराधियों को कानून के सख्त पहरे में रखा जाता है। लेकिन दुनिया में कुछ जेलें ऐसी भी हैं, जहां हालात इतने खौफनाक हैं कि वहां कैदी ही असली सत्ता चलाते हैं। इन जेलों में हिंसा, गैंगवार और खूनी संघर्ष आम बात मानी जाती है। खासकर मध्य अमेरिकी देशों होंडुरास और अल साल्वाडोर की जेलें दुनिया की सबसे खतरनाक जेलों में गिनी जाती हैं। यहां हालात इतने खतरनाक हैं कि कई बार जेल के अंदर ही एक साथ कई हत्याएं हो जाती हैं और प्रशासन हाथ पर हाथ धरे बैठे रह जाता है।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, होंडुरास और अल साल्वाडोर की कई जेलों पर खतरनाक ड्रग्स कार्टेल और गैंग्स का दबदबा है। एमएस-13 और बैरियो 18 जैसे खूंखार गिरोह सिर्फ शहरों की सड़कों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि जेलों में भी अपना नेटवर्क चलाते हैं। होंडुरास के पत्रकार मार्सेल ऑर्सोटो के अनुसार, इन देशों की भीड़भाड़ वाली जेलें कई गैंग लीडरों के लिए यह अस्थायी मुख्यालय जैसी बन चुकी हैं। जेल में बंद सरगना मोबाइल फोन और दूसरे संसाधनों की मदद से बाहर बैठे अपने लोगों को हत्या, वसूली और हमलों के आदेश देते रहते हैं। यहां तक की जेल में बैठे-बैठे ये गैंग शराब की तस्करी भी करते हैं। यही वजह है कि जेलों के भीतर हमेशा खतरनाक गैंगवार छिड़ जाती है।

होंडुरास में हुई एक घटना ने पूरी दुनिया को

झकझोर दिया था। राजधानी तेगुसिगाल्पा के पास स्थित महिलाओं की जेल पर हथियारबंद गैंग सदस्यों ने हमला कर दिया। रिपोर्ट्स के मुताबिक, हमलावरों ने जेल के अंदर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी और कई कैदियों को घेर लिया। स्थिति इतनी भयानक हो गई कि हमलावरों ने आग भी लगा दी, जिससे कई महिलाएं बाहर नहीं निकल सकीं। इस घटना में 41 लोगों की मौत हो गई थी। घटना के बाद वहां की सरकार ने भी माना था कि जेल प्रशासन को हमले की जानकारी पहले से थी, लेकिन समय रहते कोई सख्त कदम नहीं उठाया गया। कई रिपोर्ट्स के मुताबिक, इन जेलों में गैंगवार के बाद कैदियों के सिर काटकर उनसे फुटबॉल तक खेली जाती है। इस भयावह घटना के बाद सरकार ने जेलों में बड़े स्तर पर छापेमारी अभियान चलाया। तलाशी के दौरान पुलिस को पिस्तौल, असॉल्ट राइफलें, गोला-बारूद, हथगोले और भारी मात्रा में नकदी मिली। इतना ही नहीं, जेलों से कीमती आभूषण भी बरामद किए गए, जिनकी कीमत करोड़ों रुपये बताई गई। इन खुलासों ने यह साफ कर दिया कि कई जेलों के अंदर अपराधी गिरोह किस हद तक मजबूत हो चुके हैं।

अल साल्वाडोर की जेलों की हालत तो और भी ज्यादा डरावनी बताई जाती है। यहां की सबसे बड़ी जेल एस्पेरांजा में क्षमता से कई गुना ज्यादा कैदी बंद हैं। इस जेल की क्षमता लगभग 10 हजार कैदियों की है, यहां 30 हजार से ज्यादा लोगों को रखा गया है। कई रिपोर्ट्स में दावा किया गया कि यहां गैंग सदस्यों ने एक बार जेल गार्ड की हत्या कर दी थी। ऐसी घटनाओं के कारण जेल कर्मचारी भी लगातार डर के माहौल में काम करते हैं। इन घटनाओं के बाद अल साल्वाडोर के राष्ट्रपति ने जेल व्यवस्था को सख्त करने के लिए कई बड़े फैसले किए। सरकार ने एक विशाल आतंकवाद निरोधक जेल केंद्र भी बनाया है, जिसमें हजारों खतरनाक अपराधियों को रखा जा सकता है। सरकार का कहना था कि अब जेलों में मोबाइल फोन, अवैध सामान और गैंग गतिविधियों पर पूरी तरह रोक लगाने की कोशिश की जा रही है। इसके लिए बड़ी संख्या में सैनिकों और पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है। होंडुरास और अल साल्वाडोर की जेलें सिर्फ अपराधियों की कैद की जगह नहीं रह गई हैं, बल्कि कई बार ये खुद अपराध का केंद्र बन जाती हैं। गैंगवार, भीड़भाड़, हथियारों की तस्करी और प्रशासन पर गिरोहों का दबाव इन जेलों को दुनिया की सबसे खतरनाक जेलों में शामिल करता है। यही वजह है कि इन देशों की जेलों की

असम पुलिस की पवन खेड़ा से लंबी पूछताछ

» 14 मई को फिर असम पुलिस के सामने होंगे पेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गुवाहटी। असम पुलिस ने बुधवार को गुवाहाटी क्राइम ब्रांच कार्यालय में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पवन खेड़ा से 11 घंटे से अधिक समय तक पूछताछ की। यह पूछताछ मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा की पत्नी रिंकी भुइयां सरमा द्वारा दर्ज कराई गई एफआईआर से जुड़े मामले में की गई। पुलिस अधिकारियों द्वारा लंबी पूछताछ के बाद पवन खेड़ा देर शाम क्राइम ब्रांच कार्यालय से बाहर निकले।

कांग्रेस नेता ने मीडिया से बातचीत में बताया कि उन्हें आगे की पूछताछ के लिए गुरुवार सुबह फिर बुलाया गया है। उन्होंने कहा, मुझे गुरुवार सुबह 9:30 बजे फिर से क्राइम ब्रांच कार्यालय में पेश होने के लिए कहा गया है। उन्होंने कहा कि वह जांच टीम के साथ पूरा सहयोग कर रहे हैं और कानून का सम्मान करते हैं। पवन खेड़ा ने कहा, मैं पुलिस के साथ सहयोग कर रहा हूं। मैं कानून का पालन करने वाला नागरिक हूं और आगे भी जांच में सहयोग करता रहूंगा।

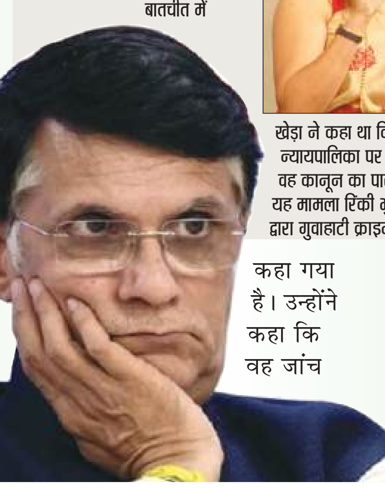

रिंकी भुइयां सरमा की शिकायत पर हो रही है पूछताछ

इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में खेड़ा को अग्रिम जमानत दी थी। कोर्ट ने उन्हें गिरफ्तारी से राहत देते हुए जांच में सहयोग करने का निर्देश दिया था। क्राइम ब्रांच कार्यालय के बाहर मीडिया से बातचीत में

खेड़ा ने कहा था कि उन्हें न्यायपालिका पर भरोसा है और वह कानून का पालन करेंगे। यह मामला रिंकी भुइयां सरमा द्वारा गुवाहाटी क्राइम ब्रांच थाने में दर्ज कराई गई शिकायत से जुड़ा है। शिकायत में आरोप लगाया गया है कि पवन खेड़ा ने सार्वजनिक रूप से दावा किया था कि रिंकी भुइयां सरमा के पास कई विदेशी पासपोर्ट हैं और विदेशों में उनके आर्थिक हित जुड़े हुए हैं। एफआईआर में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की कई धाराएं लगाई गई हैं। इनमें चुनाव से जुड़े मामलों में झूठे बयान, धोखाधड़ी, मूल्यवान दस्तावेजों की जालसाजी, सार्वजनिक रिकॉर्ड में फर्जीवाड़ा, फर्जी दस्तावेजों का इस्तेमाल, जानबूझकर अपमान और मानहानि जैसी धाराएं शामिल हैं।

दिल्ली हाईकोर्ट ने पोर्नोग्राफी वाले ऐप्स को हटाने का दिया आदेश

» कोर्ट की सख्त टिप्पणी, कहा- पूरी पीढ़ी को बर्बाद नहीं होने दे सकते

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने गूगल और एप्पल से कहा कि वे अपने प्लेटफॉर्म पर मौजूद उन तमाम मोबाइल ऐप्स को हटाएं, जिनका इस्तेमाल पोर्नोग्राफी, वेश्यावृत्ति, ड्रग्स और दूसरे गैरकानूनी कामों के लिए हो रहा है। ये ऐप्स गूगल प्ले स्टोर और एप्पल ऐप स्टोर पर उपलब्ध हैं। दिल्ली हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस देवेंद्र कुमार उपाध्याय और जस्टिस तेजस कारिया की बेंच ने कहा कि हम देश की पूरी पीढ़ी को बर्बाद होते नहीं देख सकते। गूगल और एप्पल की जिम्मेदारी बनती है कि वे ऐसे तमाम ऐप्स को हटाएं।

कोर्ट ने कहा कि इन ऐप्स की पहुंच बहुत बड़ी है और इनका असर सीधे समाज, खासतौर पर, युवाओं पर पड़ता है, इसलिए कंपनियों को पूरी सावधानी और निगरानी बरतनी होगी। ये भी सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे गैरकानूनी ऐप्स गूगल प्ले स्टोर और एप्पल एप स्टोर पर अपलोड ही न हो।उन्होंने कहा कि आईटी रूल्स, 2021 के तहत इन कंपनियों की जिम्मेदारी है कि वे अपने प्लेटफॉर्म पर गैरकानूनी और आपत्तिजनक कंटेंट को फैलने से रोकें। दिल्ली हाईकोर्ट ने यह आदेश रुबिका थापा नाम की महिला की ओर से दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया। याचिका में दावा किया गया है कि गूगल प्ले स्टोर और एप्पल ऐप स्टोर पर कई ऐसे ऐप मौजूद हैं, जो पोर्नोग्राफी, वेश्यावृत्ति, मानव तस्करी, और ड्रग्स जैसी गतिविधियों को बढ़ावा दे रहे हैं।सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार की ओर से एडिशनल सॉलिसिटर जनरल चेतन शर्मा ने याचिकाकर्ता की दलीलों का समर्थन करते हुए कहा कि ऐसे ऐप्स के खिलाफ सख्त कार्रवाई जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार अकेले दुनिया भर की हर चीज को ब्लॉक नहीं कर सकती, इसलिए गूगल और एप्पल जैसे प्लेटफॉर्म की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है।

निर्भया रिर्टन: नांगलोई में चलती बस में महिला के साथ गैंगरेप

» पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने दो आरोपियों को किया गिरफ्तार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के नांगलोई इलाके में एक महिला के साथ कथित तौर पर चलती बस में गैंगरेप किया गया है। पीड़िता के शिकायत के बाद पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए इस मामले में दो आरोपियों को भी गिरफ्तार कर लिया है। फिलहाल, पुलिस आगे की जांच में जुटी हुई है। पीड़िता ने आरोप लगाए हैं कि एक निजी बस में उसके साथ गैंगरेप किया गया। बस में पर्दे लगे हुए थे और वह रानीबाग इलाके से उस बस में बैठी थी। घटना बाहरी दिल्ली के नांगलोई में हुई।

पीड़िता पीतमपुरा इलाके की रहने वाली है, जो मंगोलपुरी की एक फैक्ट्री में काम करती है। 11 मई की रात को वह काम से पैदल घर लौट रही थी, तभी सरस्वती विहार के बी-ब्लॉक बस स्टैंड के पास एक स्लीपर बस रुकी। आरोप है कि महिला ने बस के दरवाजे पर खड़े एक आदमी से समय पूछा, जिसके बाद कथित तौर पर उसे जबरदस्ती बस के अंदर खींच लिया गया। पुलिस के अनुसार, आरोपियों ने बस को नांगलोई इलाके की ओर ले गए, जहां कथित तौर पर महिला के साथ रेप किया गया। पुलिस के अनुसार, महिला शादीशुदा है और उसके तीन बच्चे हैं। घटना के बाद पीड़िता ने नांगलोई थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। अधिकारियों ने बताया कि मेडिकल जांच के बाद पीड़िता की शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने मामला दर्ज किया और मामले में आगे की कार्रवाई के लिए एक टीम को लगाया गया। दिल्ली पुलिस ने इस मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जो बस के ड्राइवर और कंडक्टर बताए जा रहे हैं। पुलिस ने वारदात में इस्तेमाल बस को भी जब्त किया है। अधिकारियों ने बताया कि अभी इस मामले में दिल्ली पुलिस हर एंगल से जांच कर रही है।

कर्नाटक में हिजाब/जनेउ पहन कर स्कूल जा सकेंगे स्टूडेंट

» कर्नाटक सरकार ने स्कूल यूनिफॉर्म संबंधी आदेश लिया वापस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरु। कर्नाटक सरकार ने बुधवार को स्कूल और कॉलेज के यूनिफॉर्म संबंधी अपने 5 फरवरी 2022 के आदेश वापस ले लिए और नए दिशानिर्देश जारी किए। राज्य भर के शैक्षणिक संस्थानों में छात्रों को निर्धारित यूनिफॉर्म के साथ सीमित पारंपरिक और धार्मिक प्रतीक पहनने की अनुमति सरकार ने दी है। यह निर्णय 24 अप्रैल की उस घटना के कुछ सप्ताह बाद आया है, जिसमें एक स्कूल में कथित तौर पर एक छात्रा का जनेऊ काट दिया गया था और सीईटी के दौरान एक छात्रा का हिजाब हटा दिया गया था।

सभी धर्मों और आस्थाओं का हो सम्मान

इस घटना ने जनता में आक्रोश पैदा किया और राज्य में कक्षाओं में धार्मिक प्रतीकों को लेकर बहस को फिर से शुरू कर दिया। कर्नाटक के स्कूल शिक्षा और साक्षरता मंत्री मधु बंगारप्पा ने कहा कि राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री सिद्दारमैया के निर्देशों का पालन किया है, जिन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सभी धर्मों और आस्थाओं का सम्मान किया जाना चाहिए और छात्रों को स्कूल जाते समय तनाव का सामना नहीं करना चाहिए।

स्कूलों को नए निर्देशों का पालन करना जरूरी

स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग की अवर सचिव एस.एन. पद्मिनी द्वारा जारी कार्यवाही के अनुसार, नए आदेश का उद्देश्य सभी स्कूलों और कॉलेजों में एकरूपता, समानता, धर्मनिरपेक्षता और समान शिक्षा सुनिश्चित करना है। कर्नाटक शिक्षा अधिनियम, 1983 की धारा 7 और 133(2) और कर्नाटक शैक्षणिक संस्थान नियम, 1995 के नियम 11 का हवाला देते हुए, राज्य सरकार ने 5 फरवरी 2022 के सरकारी आदेश को तत्काल प्रभाव से औपचारिक रूप से रद्द कर दिया है। संशोधित दिशानिर्देशों के अनुसार, सभी सरकारी, सहायता-प्राप्त, और निजी स्कूलों के साथ-साथ विश्वविद्यालयों को सरकारी निर्देशों के अनुसार निर्धारित यूनिफॉर्म का पालन करना जारी रखना होगा।

पटना में दिनदहाड़े बदमाशों ने कैश वैन से लूटे 27 लाख

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार के पटना के गोपालपुर थाना क्षेत्र में हथियारबंद बदमाशों ने बुधवार को पुलिस को चुनौती देते हुए दिनदहाड़े सीएमएस कंपनी की कैश वैन को घेर लिया और करीब 27 लाख रुपए लूटकर फरार हो गए। घटना की सूचना के बाद विभिन्न थानों की पुलिस घटनास्थल पर पहुंच गई है और वैन पर सवार लोगों से पूछताछ कर रही है।

सीएमएस कंपनी की कैश वैन बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठानों और विभिन्न स्थानों से नकदी कलेक्शन कर फतुहा की ओर जा रही थी। इसी दौरान घात लगाए पांच बदमाशों ने वैन को ओवरटेक कर रोक लिया। इसके बाद अपराधियों ने हथियार लहराते हुए वैन पर सवार गार्ड सहित अन्य लोगों के साथ मारपीट की और तिजोरी खुलवाकर उसमें रखे रुपए लूटकर फरार हो गए।

भारत को मिली फीबा अंडर-18 एशियन कप की मेजबानी

» अहमदाबाद में खेले जाएंगे युवा बास्केटबॉल टूर्नामेंट के मुकाबले

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अहमदाबाद। भारत 13 से 23 अगस्त के बीच अहमदाबाद में फीबा अंडर18 एशिया कप 2026 की मेजबानी करेगा, जिसकी पुष्टि बुधवार को फीबा के क्षेत्रीय कार्यालय-एशिया ने की। यह तीसरी बार होगा, जब देश इस महाद्वीप के प्रमुख युवा बास्केटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन करेगा। अहमदाबाद इस द्विवार्षिक टूर्नामेंट के लिए एशिया और ओशिनिया की 16 सर्वश्रेष्ठ अंडर-18 राष्ट्रीय टीमों का स्वागत करेगा। यह शहर दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम का घर है। इसी शहर में कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 का आयोजन होगा।

यह शहर 2036 ओलंपिक के लिए भी बोली लगा रहा है, जिससे एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय खेल स्थल के रूप में इस शहर की स्थिति और मजबूत होती है। भारत ने साल 1998 में कोलकाता और 2004 में बेंगलुरु में इस टूर्नामेंट की मेजबानी की थी। ये दोनों आयोजन एशियाई बास्केटबॉल के लिए ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण थे। कोलकाता में 1998 का टूर्नामेंट चीनी बास्केटबॉल के दिग्गज याओ मिंग के अंतरराष्ट्रीय पदार्पण के लिए भी जाना जाता है। याओ ने चीन को उसके रिकॉर्ड सात खिताबों में से छठे खिताब तक पहुंचाया और एशियन बास्केटबॉल के इतिहास में सबसे प्रभावशाली हस्तियों में से एक बन गए। साल 2004 में बेंगलुरु में ईरान ने सभी 8 मैच जीतकर चैंपियनशिप अपने नाम की थी।

अम्मान में हुआ था पिछला टूर्नामेंट

ऑस्ट्रेलिया ने साल 2024 में अम्मान (जॉर्डन) में खिताब अपने नाम किया था। डिफेंडिंग चैंपियन इस बार टाइटल बचाने उतरेगा, उनके साथ न्यूजीलैंड और 13 अन्य टीमें भी होंगी, जिन्होंने एशिया के क्षेत्रीय टूर्नामेंट्स से क्वालीफाई किया है। कजाकिस्तान पहली टीम थी, जिसने इस साल की शुरुआत में सेंट्रल एशियन बास्केटबॉल एसोसिएशन (सीएबीए) अंडर-18 चैंपियनशिप में अपना दबदबा बनाते हुए क्वालीफाई किया था। साउथ एशियन बास्केटबॉल एसोसिएशन के क्वालीफायर 25 से 29 मई तक कोलंबो में होंगे। ईस्ट एशिया के क्वालीफायर 2 से 7 जून तक फुकुओका, जापान में निर्धारित हैं। दक्षिण-पूर्व एशियाई क्वालीफायर 10 से 14 जून तक क्राबी (थाईलैंड) में होंगे, जबकि खाड़ी क्षेत्र के क्वालीफायर दोहा में होंगे।

सियासत, संवेदना और सवालों के बीच विदा हुए प्रतीक यादव

भैसाकुंड में हुआ अंतिम संस्कार विक्रमादित्य मार्ग से भैसाकुंड तक उमड़ा जनसैलाब

डॉग लवर की पहचान के साथ निकली अंतिम यात्रा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी परिवार एक बार फिर गहरे शोक में डूबा नजर आया जब प्रतीक यादव का अंतिम संस्कार लखनऊ के भैसाकुंड स्थित बैकुंठधाम में पूरे राजनैतिक और सामाजिक माहौल के बीच किया गया। समाजवादी पार्टी संस्थापक मुलायम सिंह यादव के छोटे बेटे और सपा प्रमुख अखिलेश यादव के सौतेले भाई प्रतीक यादव के निधन की खबर ने न सिर्फ यादव परिवार बल्कि समाजवादी समर्थकों को भी भावुक कर दिया। अंतिम संस्कार से पहले उनका पार्थिव शरीर विक्रमादित्य मार्ग स्थित आवास पर अंतिम दर्शन के लिए रखा गया, जहां सुबह से ही समर्थकों, शुभचिंतकों और आम लोगों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। हर किसी की आंखों में उदासी और चेहरे पर गम साफ दिखाई दे रहा था।

प्रतीक यादव की अंतिम यात्रा भी बिल्कुल अलग अंदाज में दिखाई दी। उनकी पहचान सिर्फ एक राजनीतिक परिवार के सदस्य के तौर पर नहीं थी बल्कि वह डॉग लवर और पशु प्रेमी के रूप में भी खासे लोकप्रिय थे। यही वजह रही कि उनकी अंतिम यात्रा में फूलों के साथ-साथ उनकी जिंदगी से जुड़ी तस्वीरें भी वाहन पर सजाई गईं। कई तस्वीरों में वह अपने पालतू कुत्तों के साथ नजर आ रहे थे, जिसने पूरे माहौल को और भावुक बना दिया।

विक्रमादित्य मार्ग से भैसाकुंड तक निकली अंतिम यात्रा में हजारों लोग शामिल हुए। सड़क के दोनों ओर खड़े समर्थक नम आंखों से उन्हें अंतिम विदाई देते नजर आए। समाजवादी पार्टी, भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं के साथ-साथ आम नागरिक भी बड़ी संख्या में अंतिम यात्रा में शामिल हुए। समाजवादी पार्टी की सांसद डिंपल यादव ने उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित की। परिवार के सदस्यों के साथ मौजूद डिंपल यादव भावुक नजर आईं।

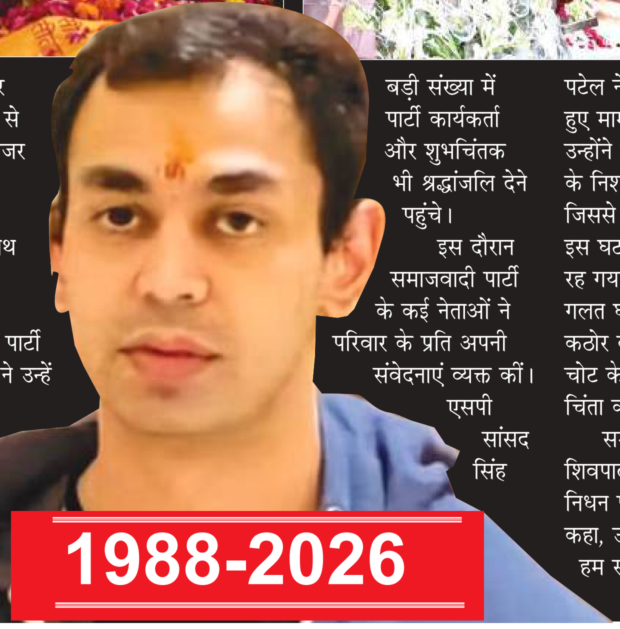

बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता और शुभचिंतक भी श्रद्धांजलि देने पहुंचे।

इस दौरान समाजवादी पार्टी के कई नेताओं ने परिवार के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं। एसपी सांसद सिंह पटेल ने इस घटना को बेहद दुखद बताते हुए मामले की गहन जांच की मांग की। उन्होंने कहा कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में चोट के निशान मिलने की बात सामने आई है, जिससे कई सवाल खड़े होते हैं। जब मुझे इस घटना की जानकारी मिली तो मैं स्तब्ध रह गया। यदि किसी प्रकार की साजिश या गलत घटना हुई है, तो दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई होनी चाहिए। पोस्टमार्टम में चोट के तीन पुराने निशानों का उल्लेख गंभीर चिंता का विषय है

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव ने भी प्रतीक यादव के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया। उन्होंने कहा, उनका अचानक इस तरह चले जाना हम सभी के लिए अत्यंत पीड़ादायक है। पूरा परिवार शोक में डूबा हुआ है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने भी परिवार से मुलाकात कर अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं। उन्होंने कहा, इतनी कम उम्र में किसी का दुनिया छोड़ देना बेहद हृदयविदारक है। यह सिर्फ परिवार ही नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए दुखद क्षण है। ईश्वर परिवार को यह दुख सहने की शक्ति दें। उन्होंने कहा कि यह घटना हर किसी को झकझोर देने वाली है। उन्होंने कहा, जब कोई युवा व्यक्ति अचानक हमें छोड़कर चला जाता है, तो वह केवल एक परिवार की नहीं बल्कि पूरे समाज की क्षति होती है।

समाजवादी पार्टी के विधायक अरमान खान ने भी इस घटना को दुखद बताया। उन्होंने कहा कि इतनी कम उम्र में किसी का निधन होना अत्यंत दुखद है और इससे पूरा राजनीतिक परिवार आहत है। उन्होंने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री हंसराज विश्वकर्मा ने कहा कि वह इस घटना से बेहद दुखी हैं। उन्होंने कहा, मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति मिले। इतनी कम उम्र में किसी का जाना बहुत पीड़ादायक होता है। वहीं, यूपी सरकार के मंत्री राकेश सचान ने कहा कि किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि प्रतीक यादव इतनी जल्दी सभी को छोड़कर चले जाएंगे। उन्होंने इसे राजनीति और समाज दोनों के लिए बड़ी क्षति बताया।

प्रवीण सूद को मिला एक और सेवा विस्तार, बने रहेंगे सीबीआई निदेशक

» केंद्र सरकार ने जारी किया आदेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) के निदेशक प्रवीण सूद का कार्यकाल एक साल के लिए बढ़ा दिया गया है। इस संबंध में आदेश भी जारी कर दिया गया है। आदेश में कहा गया है कि कैबिनेट की नियुक्ति समिति ने चयन समिति की सिफारिश के आधार पर कर्नाटक कैडर के 1986 बैच के आईपीएस अधिकारी प्रवीण सूद का केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) निदेशक के रूप में कार्यकाल 24 मई 2026 के बाद एक साल के लिए बढ़ाने को मंजूरी दे दी है।

प्रवीण सूद ने 25 मई 2023 को सीबीआई निदेशक के तौर पर जिम्मेदारी संभाली थी। तब उन्होंने दो साल की अवधि के लिए सीबीआई निदेशक का पदभार संभाला था। मई 2025 में उनको एक साल का सेवा विस्तार दिया गया था और अब उन्हें एक बार फिर से सेवा विस्तार दिया गया है। अब वह इस पद पर मई 2027 तक बने रहेंगे।

प्रवीन सूद 1986 बैच के कर्नाटक कैडर के आईपीएस अधिकारी हैं। सीबीआई निदेशक बनने से पहले वह कर्नाटक के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) के रूप में कार्यरत थे। उनका जन्म 1964 को हिमाचल

प्रदेश के कांग?ा में हुआ था। मंगलवार को अगले सीबीआई निदेशक की नियुक्ति को लेकर पीएमओ में बैठक हुई थी। इस बैठक में मुख्य न्यायाधीश और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी शामिल हुए थे। बताया जा रहा है कि इस बैठक में उनके सेवा विस्तार को लेकर फैसला लिया गया।

हालांकि, राहुल गांधी ने सीबीआई निदेशक की नियुक्ति की प्रक्रिया को लेकर सवाल उठाया था और सोशल मीडिया पर पीएम मोदी को लिखे एक पत्र को साझा किया था। उन्होंने कहा था कि यह प्रक्रिया पक्षपातपूर्ण है और वह इसमें शामिल होकर अपनी संवैधानिक जिम्मेदारी से पीछे नहीं हट सकते। राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म %एक्स% पर पत्र साझा करते हुए लिखा, %%मैंने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर सीबीआई निदेशक चयन प्रक्रिया पर अपना विरोध दर्ज कराया है। मैं एक पक्षपातपूर्ण प्रक्रिया में शामिल होकर अपनी संवैधानिक जिम्मेदारी नहीं छोड़ सकता। नेता प्रतिपक्ष कोई रबर स्टैंप नहीं है।%%

ट्रक में जा घुसी स्कार्पियो, एक ही परिवार के चार की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बांदा जिले में बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे पर भीषण स?क हादसा हो गया। इसमें एक स्कॉर्पियो गैस सिलिंडर लदे ट्रक से जा भिड़ी। हादसे में स्कॉर्पियो के चालक सहित चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, एक 20 वर्षीय युवती गंभीर रूप से घायल हो गई।

तत्काल जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद युवती को कानपुर रेफर कर दिया है। बताया जा रहा है कि सभी मृतक और घायल आजमगढ़ के रामगढ़ के रहने वाले एक ही परिवार के सदस्य हैं, जो कबरई जा रहे थे।

बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे पर दर्दनाक सड़क हादसे की सूचना पर जिलाधिकारी अमित आसेरी ने घटनास्थल का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि कोतवाली देहात क्षेत्र के अंतर्गत बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे पर एक स्कार्पियो और ट्रक की भिड़ंत हुई है। इस हादसे में चार लोगों की मौत हो गई है।

प्रशासन द्वारा शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। घटना में एक युवती गंभीर रूप से घायल है, जिसे प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए कानपुर रेफर किया गया है। प्रशासन पीड़ित परिवार के संपर्क में है और नियमानुसार हर संभव सहायता सुनिश्चित की जाएगी।

नींद की झपकी बनी चार मौतों का कारण

बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे हादसे को लेकर एसपी पलाश बंसल ने बताया कि आज थाना कोतवाली देहात को सूचना मिली कि बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे पर एक डीसीएम और स्कार्पियो के बीच भिड़ंत हो गई है। पुलिस, फायर ब्रिगेड और रेस्क्यू टीमों ने तत्काल मौके पर पहुंचकर राहत कार्य शुरू किया।

गाड़ी पीछे से डीसीएम में जा घुसी

स्कार्पियो में एक पुरुष और चार महिलाएं सवार थीं। मौके पर तीन लोगों की मौत हो गई थी, जबकि एक अन्य ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। प्रथम दृष्टया दुर्घटना का कारण स्कार्पियो चालक को नींद की झपकी आना प्रतीत हो रहा है, जिससे गाड़ी पीछे से डीसीएम में जा घुसी। यातायात सुचारु कर दिया गया है और विधिक कार्रवाई जारी है।

अलीगढ़ में स्कूली बस पलटी, कई बच्चे घायल

अलीगढ़। हाथरस सीमा पर गंगीरी थाना क्षेत्र में एक स्कूल बस अनियंत्रित होकर पलट गई, जिसमें कई स्कूली बच्चे घायल हो गए। इसकी जानकारी गुरुवार को अलीगढ़ के एसपी ग्रामीण मनीष कुमार मिश्रा ने दी। घटना के तुरंत बाद स्थानीय ग्रामीण मौके पर पहुंचे और फंसे हुए छात्रों को बचाने के लिए बस की खिड़?कियां तोड़ दीं। कुछ बच्चों को मामूली चोटें आईं और उन्हें इलाज के लिए पास के एक चिकित्सा केंद्र में ले जाया गया, जबकि गंभीर रूप से घायल एक बच्चे को अलीगढ़ के एक अस्पताल में रेफर कर दिया गया। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, बस में बच्चे स्कूल जा रहे थे, तभी चालक ने वाहन से नियंत्रण खो दिया, जिसके कारण बस सड़क किनारे खाई में पलट गई। एसपी ग्रामीण मनीष कुमार मिश्रा ने बताया कि घटना की सूचना मिलते ही पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। दुर्घटना में करीब सात से आठ बच्चे घायल हुए हैं। एक बच्चे के चेहरे पर चोटें आई हैं और उसे इलाज के लिए अलीगढ़ के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हम मामले की जांच कर रहे हैं। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि घायल हुए अन्य सभी बच्चे खतरे से बाहर हैं। अधिकारियों ने घटना की विस्तृत जांच शुरू कर दी है, जिसमें स्कूल बस की स्थिति और उपयुक्तता की जांच भी शामिल है। इस घटना ने उत्तर प्रदेश में स्कूली वाहनों के सुरक्षा मानकों को लेकर एक बार फिर चिंताएं बढ़ा दी हैं। 2 मार्च को कासगंज जिले में एक दुखद दुर्घटना में छह वर्षीय बच्ची की मौत हो गई, जब वह चलती स्कूल बस के टूटे हुए फर्श से गिर गई और उसके पिछले पहिए के नीचे कुचल गई। मृत बच्ची की पहचान अनन्या कुमारी के रूप में हुई थी, जो अलीगढ़ के माउंट देव इंटरनेशनल स्कूल में यूकेजी की छात्रा थी।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 । Email : daily4pm@gmail.com । website : www.4pm.co.in
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा